ॐ

श्री वीतरागाय नमः

ओकारं बिंदु संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ,
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन भवोदधिशोषणाय.

वस्तु छंद

नमो केवला नमो केवलरूप भगवान,
मुख ओमकार धूनि सुनि अर्थ गणधर विचारै
रचि आगम उपदिशै भविक जीव संशय निवारै.

मांगलिक काव्यो

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतमो गणी
मंगलं कुंदकुंदार्यो, जैनधर्मोडस्तु मंगलम्.

स्तुति

छे प्रतिमा मनोहारिणी दुःख हरि सीमंधर जिणंदनी
भक्तोने छे सर्वा सुखकरी, जाणे खीली चंदनी
आ प्रतिमाना गुण भावधरीने, जे आतमा गाय छे,
पामी सघळां सुख ते स्वरूपना मुक्ति भणी जाय छे.

चैत्यवंदन

आज देव अरिहंत नमुं, समरूं तारूं नाम
ज्यां ज्यां प्रतिमा जिनतणी, त्यां त्यां करूं प्रणाम,

श्री सीमंधर स्वामीनुं चैत्य वंदन

श्री सीमंधर जगधणी, आ भरते आवो
करूणावंत करुणा करी, अमने वंदावो. 1.

सकल भक्त तुमे धणी, जो होवे अम नाथ
भवोभव हुं छुं ताहरो, नहीं मेलुं हवे साथ. 2

सयल संग छंडी करी, चारित्र लईशुं
पाय तुमारा सेवीने, शिवरमणी वरशुं. 3

ए अळजो मुजने घणो, पूरो सीमंधर देव
इहां थकी हुं विनवुं, अवधारो मुज सेव. 4

***

दर्शन स्तुति

(कवि भुधरदासजी)

(हरिगीत)

पुलकंत नयन चकोर पक्षी, हंसत उर इंदीवरो,
दुर्बुद्धि चकवी विलख वछुरी, निबिड मिथ्यातम हरो
आनंद अबुधि उमगि उछर्यो, अखिल आतप निरंदले,
जिनवदन पूरनचंद्र निरखत, सकल मनवांछित फले. 1

मम आज मातम भयो पावन, आज विघन विनाशिया,
संसार सागर नीर निवड्यो, अखिल तत्त्व प्रकाशिया
अब भई कमला किंकरी मम, उभय भव निर्मळ थये,
दुःख ज्यों दुर्गतिवास निवर्यो, आज नव मंगल भये. 2

मन हरन मूरति हेरि प्रभुकी, कौन उपमा लाईये,
मम सकल तनके रोम हुलसे, हर्ष और न पाईये
कल्याणकाळ प्रत्यक्ष प्रभुको, लखें जे सुर नर घने,
तिह कालकी आनंद महिमा, कहत क्यों मुखसों बने. 3

भर नयन निरखे नाथ तुमको, और वांछा ना रही,
मन ठठ मनोरथ भये पूरन, रंक मानो निधि लही
अब होउ भव भव भक्ति तुम्हारी, कृपा ऐसी किजिये,
कर जोर भुधरदास विनवे, यही वर मोहि दीजिये. 4

***

दर्शन पाठ

(बुधजनजी)

(राग हरिगीत)

प्रभु पतितपावन मैं अपावन, चरन आयो सरनजी,
यों विरद आप निहार स्वामी, मेट जामनमरनजी;
तुम ना पिछान्या आन मान्या, देव विविध प्रकारजी,
या बुद्धिसेती निज न जाण्यो, भ्रम गिण्यो हितकारजी. 1

भव विकटवनमें कुमति वैरी, ज्ञानधन मेरो हर्यो,
तब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्ट गति धरतो फिर्यो;
धन घडी यो धन दिवस यो ही, धन जनम मेरो भयो,
अब भाग मेरो उदय आयो दरश प्रभुको लख लयो. 2

छबि वीतरागी नगनमुद्रा, दृष्टि नासापैं धरैं,
वसु प्रातिहार्य अनंत गुणयुत, कोटि रवि छविको हरैं;
मिट गयो तिमिर मिथ्यात्व मेरो, उदय रवि आतम भयो,
मो उर हरख एसो भयो, मनु रंक चिंतामणि लयो. 3

मैं हाथ जोड नवाय मस्तक, वीनवुं तुम चरनजी,
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन सुनहु तारन तरनजी;
जाचूं नहीं सुरवास पुनि नरराज परिजन साथजी,
'बुध' जाचहूं तुम भक्ति भव भव, दीजिये शिवनाथजी. 4

***

श्री परमात्मानुं चैत्य वंदन

परमेश्वर परमात्मा, पावन तुं परमिठ्ठ;
जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणें में दिठ्ठ. 1

अचल अकल अविकार सार, करुणारस सिंधु;
जगती जन आधार एक; निष्कारण बंधु 2

गुण अनंत प्रभु ताहरा, किमही कळ्या न जाय;
सेवक प्रभु जिन ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय. 3

***

श्री सीमंधर स्वामीनुं स्तवन

महाविदेह क्षेत्रमां सीमंधर स्वामी, सोनानुं सिंहासनजी,
रत्ननां त्यां छत्र बिराजे, रत्नमणिना दीवा दीपेजी,
कुंकुम वरणी त्यां गढ्ढुंळी बिराजे, मोतीना अक्षर सारजी,
त्यां बेठा सीमंधर स्वामी, बोले मधुरी वाणीजी,
केसर चंदन भर्या कचोळां, अष्ट प्रकारी पूजाजी,
पहेली पूजा अमारी होजो, उगमते प्रभातेजी.

***

सीमंधर स्वामी स्तवन

(राग-प्रभातीआनो)

शृणुत सीमंधरा, प्रणमी निज कंधरा;
वळी वळी तुज चरण सेव मागुं. –शृणुत० 1

प्रभु चरण सेवना; चित्त प्रसन्ने करे;
अधिकारी भवि भाग्यशाळी. –शृणुत० 2

करमदळ चूरवा, निज गुणो पूरवा;
प्रह ऊठी प्रतिदिने पाय लागुं. –शृणुत० 3

कर कृपा दास पर, दुःख बधां नाश कर,
सुख दियो मोक्षनुं मे अथागुं. –शृणुत० 4

ज्ञान मुज आतमा, खोल परमातमा;
सकल शक्ति स्वभावे हुं जागुं. –शृणुत० 5

***

श्री जिन स्तवन

मारे माथे सीमंधर स्वामी अखंड मारी रक्षा करे,
ए रक्षकना उग्र रूपवाळा आवी कसोटी कपरी करे.

मने चिंता करवा न कदि देता प्रसन्न मने राख्या करे,
एनी करुणानो धोध नित्य व्हेतो कल्याण साचुं बोध्या करे.

कदि ऊतरुं जो मारगे आडे तो सत्य पंथ चिंध्या करे,
मने पडवा न दे कदि खाडे सदाय साथ आप्या करे.

नाथ श्रद्धाना पारखां लेता ने तोय शक्ति आप्या करे,
धुडमांथी कनक करी देता के दिव्य प्रभु शक्ति खरी.

***

प्रभु दर्शनथी चित्त थंभी गया विषे

चित्तडुं हमारूं थंभी गयुं, त्यां प्रभुनुं दर्शन मळी गयुं;
जीवन हमारूं शुद्ध थयुं त्यां, प्रभु भजनमां भळी गयुं.
कर्म न फावे प्रभुना रागे, पाप सकळ प्रभु ध्याने भागे,
आतम धन मने मळी गयुं. चित्तडुं.....

भक्तिथी प्होंचे मुक्ति किनारे; चढे छे दिलडुं ज्ञान मिनारे
अज्ञान हमारूं ढळी गयुं. चित्तडुं.....

प्रभु भजी करो भवथी किनारा; अमूल्य जिनवर मल्या दिलारा,
दारिद्र सघळुं टळी गयुं. चित्तडुं. . . . . .

देव भवोभव जिनवर होजो, अंतर रही अंतर मल धोजो,
भ्रमणा दुःख त्यां टळी गयुं. चित्तडुं. . . . . .

सीमंधर जिनजी दर्शन करीने, आतम गुणथी दिल भरीने,
भक्तोतणुं चित्त हळी गयुं. चित्तडुं. . . . . .

***

श्री जिनजीनी चरण पूजा

हे जिनराज तुमारा चरण कमळनी पूजना,
हृदय उलसित थाय के भाग्य मानुं घणुं रे – हे

जे जगनाथ तुमे तो छो त्रिभुवनना नाथजो,
अनंतगुणनी रत्नधाराए सोहता रे – हे

विश्वउपदेष्टा छो जगतारणहारजो,
जन्म जरा विण गुणनिधि लोकेश्वरा रे – हे

दर्शन ताहरा प्रभु अनंत मोंघा मूलना,
आप कृपाए वरस्या अमृत मेह्डला रे – हे

परम रहस्य प्रभु आतमज्ञान निधान जो,
रत्नत्रयीमय प्रभु पधार्या आंगणे रे – हे

धन्य दिवस ने धन्य कृतार्य हुं आज जो,
जय जय वर्तो जग गुरु तणी सेवना रे – हे

***

प्रभु दर्शनथी उल्लास विषे

(सुणजो हो प्रभु-ए देशी)

दीठी हो प्रभु दीठी जगगुरु तुज,
मूरति हो प्रभु मूरति मोहन वेलडीजी;
मीठी हो प्रभु मीठी ताहरी वाण,
लागे हो प्रभु लागे जेसी सेलडीजी. 1

जाणुं हो प्रभु जाणुं जन्म कृतार्थ,
जो हुं हो प्रभु जो हुं तुम साथे मिल्योजी;
सुरमणि हो प्रभु सूरमणि पाम्यो हाथ,
आंगणे हो प्रभु आंगणे मुज सुरतरु फल्योजी. 2

जाग्या हो प्रभु जाग्या पुण्य अंकुर,
माग्या हो प्रभु मुह माग्या पासा ढल्याजी.
वूठ्या हो प्रभु वूठ्या अमीरस मेह,
नाठा हो प्रभु नाठा अशुभ शुभ दिन वल्याजी. 3

भूख्या हो प्रभु भूख्या मिल्या घृतपूर,
तरस्या हो प्रभु तरस्या दिव्य उदक मिल्याजी;
थाक्या हो प्रभु थाक्या मिल्या सुखपाल,
चाहतां हो प्रभु चाहतां सज्जन हेजे हल्याजी. 4

दीवो हो प्रभु दीवो निशा वन गेह,
साखी हो प्रभु साखी1 **थले**2 **जलनौका**3 **मलीजी**
कलियुगे हो प्रभु कलियुगे दुल्लहो मुज,
दरिशण हो प्रभु दरिशण लह्युं आशा फळीजी. 5

---

1. आम्रवृक्ष. 2. मरूभूमिमां 3 पाठांतर साथी हो प्रभु साथी थले जळनौका मिलीजी

सेवक हो प्रभु सेवक चरणनो दास,
विनवे हो प्रभु विनवे सीमंधर सुणोजी,
1 **कंईये हो प्रभु कंईये म देशो छेह,**
देजो हो प्रभु देजो सुख दरिशण तणोजी. 6

---

1. पाठांतर कहीए.

***

1-सीमंधर प्रभुने विनंती

(सिद्धचक्र पद वंदो-ए देशी.)

श्री सीमंधर जिनवर स्वामी, विनतडी अवधारो
शुद्ध धर्म प्रगट्यो जे तुमचो, प्रगटो तेह अमारो रे
स्वामी, विनविये मन रंगे. 1

जे पारिणामिक धर्म तुमारो, तेहवो अमचो धर्म;
श्रद्धा-भासन-रमण वियोगे, वलग्यो विभाव अधर्म रे
स्वामी, विनविये मन रंगे. 2

वस्तु स्वभाव स्वजाति तेहनो, मूल अभाव न थाय;
परविभाव अनुगत परिणतिथी, कर्मे ते अवराय रे
स्वामी, विनविये मन रंगे. 3

जे विभाव ते पण नैमित्तिक, संततिभाव अनादि;
परनीमित्त ते विषय संगादिक, ते संयोगे सादिरे
स्वामी, विनविये मन रंगे. 4

अशुद्ध निमित्ते ए संसरता, *अत्ता **कत्ता परनो;
शुद्ध निमित्त रमे जब चिदघन, कर्ता भोक्ता घरनो रे
स्वामी, विनविये मन रंगे. 5

---

* आत्मा. ** कर्ता

जेना धर्म अनंता प्रगट्या, जे निजपरिणति वरियो;
परमातम जिनदेव अमोही, ज्ञानादिक गुण दरियो रे
स्वामी, विनविये मन रंगे. 6

अवलंबन उपदेशक रीते, श्री सीमंधर देव;
भजीए शुद्ध निमित्त अनोपम, तजीए भवभय टेवरे
स्वामी, विनविये मन रंगे. 7

शुद्ध देव अवलंबन करतां, परिहरिये परभाव;
आतम दर्म रमण अनुभवतां, प्रगटे आतम भावरे
स्वामी, विनविये मन रंगे. 8

आतम गुण निर्मळ नीपजतां, ध्यान समाधि स्वभावे;
पूर्णानंद सिद्धता साधी, देवचंद्र पद पावे रे
स्वामी, विनविये मन रंगे. 9

***

श्री सीमंधर प्रभुने चांदलीया साथे संदेश

सुणो चंदाजी सीमंधर परमातम पासे जाजो,
मुज विनतडी प्रेम धरीने एणी परे तुम संभळावजो;
जेनी कंचन वरणी काया छे, जस धोरी लंछन पाया छे,
पुंडरीकगिरि नगरीनो राया छे. . . . . सुणो. 1

जे त्रण भुवननो नायक छे, जस सो ए इंद्रो पायक छे;
ज्ञान दरिसण जेहने क्षायक छे. . . . . सुणो. 2

बार पर्षदा मांही बिराजे छे, महा मंगळ अतिशय छाजे छे;
दिव्य ध्वनिना नादे गाजे छे. . . . . सुणो. 3

भविजनने ते प्रतिबोधे छे, तुम अधिक शीतळ गुण सोहे छे;
रूप देखी भविजन मोहे छे. . . . . सुणो. 4

तुम सेवा करवा रसीयो छुं, पण भरतमां दुरे वसीयो छुं;
पण भावेथी नजीक वसियो छुं. . . . . सुणो. 5

***

श्री सीमंधर स्तुति

श्री सीमंधर जिनंदा सविसुरवृंदा,
सेवे आनंदा दयानिधि महाराज;
उपशम रस कंदा, मुख पूनमचंदा,
भवभय फंदा काटन तुं जिनराज. श्री0

दर्शन पामी आज तुमारुं,
जाग्या रे पुण्य अंकुर;
शांत सुधारस सिंचन करती,
मूर्ति अमीरस पूर रे;
ए शिवसुख म्हाली मुज मन व्हाली,
भव सिन्धु मांहि पाज. श्री0 1

सुरमांहि जिम सुरपति सोहे,
नदी मांहे जिम गंग;
तरू मांहे जिम चंदन सोहे,
देवमां तुं जिन चंगरे;
मुज सविदुःख कापो प्रभु सुख आपो
शिवसुखना शिरताज. श्री0 2

समरथ साहिब नाथ हमारो,
पाम्यो छे अति उदार;
मन विशरामी प्रीतम म्हारो,
आतमनो आधार रे;
ए प्रभु हमारा अंतर प्यारा,
भावे वंदु जिन आज. श्री0 3

***

श्री सीमंधर जिन स्तवन

(राग-भमरीया कूवाने कांठडे)

मूर्ति निहाळी, प्रभु सीमंधर जिननी;
देखी मारूं दिल हरखाय रे. (ए चाल.)

अलक निरंजन रूप छे तुमारूं;
क्षणे क्षणे ध्यान धरूं जिनजी तुमारूं;
जोई जोई हरख न मायरे. मूर्ति0 1

पंचम काळे तारो महिमा छे भारी,
भक्तजनो ने सविसुख करनारी;
पाप चूरण महाराय रे, मूर्ति0 2

निर्मळ ज्ञान मुद्रा शोभे छे सारी,
अर्ध पद्मासने देखो मनोहारी;
देखी मुज दिल विकसाय रे. मूर्ति0 3

***

श्री सीमंधर स्वामी प्रत्ये संदेश

मनडुं ते मारूं मोकले, मारा व्हालाजी रे;
शशधर साथे संदेश, जईने केजो मारा व्हालाजी रे.
भरतना भक्तने तारवा-मा0 एकवार आवोने आ देश. 1

प्रभुजी वसो पुष्कलावती-मा0 महाविदेह क्षेत्र मोजार, जईने
पुरी राजे पुंडरगिरि-मा0 जीहां प्रभुनो अवतार. जईने. 2

श्री सीमंधर साहेबा-मा0 विचरंता वीतराग, जईने
प्रतिबोधो बहु प्राणीने-मा0 तेहनो पामे कोण ताग. जईने. 3

मन जाणे ऊडी मळुं-मा0 पण पोंचे नहीं पांख, जईने
भगवंत तुम जोवा भणी-मा0 अलजा धरे बेऊ आंख. 4

दुर्गम मोटा डुंगरा-मा0 नदी नाळांनो नहिं पार, जईने
घाटीनी आंटी घणी-मा0 अटवी पंथ अपार. जईने. 5

कागळीओ केम मोकलु-मा0 होंश तो नित्य नवली होय,
लखुं जे जे लेखमां-मा0 लाख गमे अभिलाख, जईने. 6

लोकालोक स्वरूपना-मा0 जगतमां तमे छो जाण, जईने
जाण आगे शुं जणावीए-मा0 आखर अमे अजाण. 7

***

श्री सीमंधर जिन स्तवन

धन्य धन्य क्षेत्र महाविदेहजीरे, धन्य पुंडरिगिरी गाम
धन्य तिहांना मानवीजी, नित्य ऊठी करे प्रणाम---

सीमंधर स्वामी क्यारे रे, हुं महाविदेह आवीश.
जयवंता जिनवर क्यारे रे, हुं तमने वांदीश. सी. 1

चांदलिया संदेशडोजी, कहेजो सीमंधर स्वाम;
भरतक्षेत्रना मानवीजी, नित्य ऊठी करे रे प्रणाम. सी. 2

समवसरण देवे रच्युं तिहां, सो ए इन्द्र नरेश;
सोनातणे सिंहासन बेठा, चामर छत्र धरेश. सी. 3

रायने वहालो घोडलाजी, वेपारीने वहाला छे दाम;
अमने वहाला सीमंधर स्वामी, जेम सीताने श्रीराम. 4

नहिं मागुं प्रभु राज्यऋद्धिजी, नहिं मागुं गरथ भंडार;
हुं मागुं प्रभु एटलुंजी, तुम पासे अवतार, सी. 5

देवे न दीधी पांखडीजी, केम करी आवुं हजुर ?
मुजरो मारो मानजोजी, प्रह उगमते सूर. सी. 6

तुम सेवकनी विनतिजी, मानजो वारंवार;
बे कर जोडी विनवुंजी, विनतडी अवधार. सी. 7

***

श्री सीमंधर प्रभुने कागळ

(राग-धोळ)

स्वस्ति श्री महाविदेह क्षेत्रमां जीहां बिराजे तीर्थंकर वीश,
तेने नमावुं शीश, कागळ लखुं नाथजी. टेक. 1

स्वामी जघन्य तीर्थंकर वीश छे, उत्कृष्टा एकसो सीतेर,
तेमां नहि फेर, कागळ लखुं नाथजी. 2

स्वामी गंध हस्तिसम गाजता, त्रण लोक तणा प्रतिपाळ,
छो दीन दयाळ, कागळ लखुं नाथजी. 3

स्वामी काया सुकोमळ शोभती, शोभे सुंदर सोवन वान,
करूं परणाम, कागळ लखुं नाथजी. 4

स्वामी गुण अनंता छे आपना, एक जीभे कह्यां केम जाय ?
लख्या न लखाय, कागळ लखुं नाथजी. 5

भरत क्षेत्रथी लखीतंग जाणजो, आप दर्शन इच्छक दास,
राखुं तुम आश, कागळ लखुं नाथजी. 6

में तो पूर्वमां खामी राखी घणी, जेथी तुम दर्शन रह्या दूर,
न पोचुं हजुर, कागळ लखुं नाथजी. 7

मारा मनमां संदेह अति घणा, आप विना कहुं किहां जाय ?

अंतर अकळाय, कागळ लखुं नाथजी. 8

आडा पहाड पर्वतो ने डुंगरा, जेथी नजर नाखी नव जाय,
दर्शन केम थाय ? कागळ लखुं नाथजी. 9

स्वामी कागळ पण पहोंचे नहि, नहि पहोंचे संदेशो के सांय,
हुं तो रहुं आंय, कागळ लखुं नाथजी. 10

देवे पांख आपी होये पिंडमां, ऊडी आवुं देशावर दूर,
तो पहोंचुं हजुर, कागळ लखुं नाथजी. 11

स्वामी केवळज्ञाने करी देखजो, मारा आतमना छो आधार,
उतारो भव पार, कागळ लखुं नाथजी. 12

ओछुं अधिक प्रभुजी जे लख्युं, माफ करजो जरूर जिनराय,
लागुं तुम पाय, कागळ लखुं नाथजी. 13

संवत ओगणीसे सताणुं सालमां भक्तजन हर्षे गुण गाय,
प्रणमी प्रभु पाय, कागळ लखुं नाथजी. 14

***

श्री सीमंधर जिनने करोडो प्रणाम विषे

महाविदेहना वासी जिनने, करोडो प्रणाम. जिनने0
आदि जिनवर जगजन स्वामी, तुम दरशनथी शिवसुख गामी
थया छे अनंत. जिनने0 1

मूरति तुमारी मनहरनारी, मिले नहीं जगजोड तुमारी;
दिव्य शरीरी देखी. जिनने0 2

पुन्य उदयथी नरभव पायो, सीमंधर प्रभुनो जोग सुहायो;
भवजल तरवा काज. जिनने0 3

पंचमकाळे तरवा काजे, तीरथ प्यारूं जगमांही गाजे;
सेवो ए सुखधाम. जिनने0 4

***

श्री नेमप्रभु महिमा विषे

बाळ ब्रह्मचारी जिणंद पद धारी,
सेवे सुरनर चंदा रे;
गिरनार गिरि नेमनाथ बिराजे,
भेटंत टळे भव फंदा रे. बाळ0

बाळ ब्रह्मचारी विषय निवारी
निस्नेही गुणराया रे;
सचित्त पुद्गल भोग क्षीण जाणी,
संयम लीधो गिरनारी रे. बाळ0

जिणंद पद धारी रागद्वेष निवारी,
घाति करम क्षय कारी रे;
सहेसावने केवळ प्रगटावी,
कल्याण मंगल जयकारी रे. बाळ0

इन्द्रादिक सुर असंख्य आवे,
समवसरण विरचावे रे;
प्रर्षदा बार मिले तिहां वेगे,
देशना जिनजी सुणावे रे. बाळ0

भेटंता टळे भव फंदा,
आतम ज्ञाने राचो रे;
शुक्ल शुक्ल पर्याय ग्रहीने,
शुद्ध परिणतिमां राचो रे. बाळ0

अयोगी गुणस्थान ग्रहीने,
जोगातीत पद लीधो रे;
समश्रेणी छे पांचमी टूंके,
आत्मप्रदेश घन कीधो रे. बाळ0

गिरनार गिरि पर नेम जिणंदकी,
कल्याणिक त्रण भूमि रे;
ज्ञान शीतल गुण रागे गाई,
अंतर आतम पाई रे. बाळ0

***

श्री नेमप्रभुने करोडो प्रणाम

गिरनार गिरिना वासी जिनने करोडो प्रणाम,
प्रभुने करोडो प्रणाम.

नेमि जिनेश्वर आनंददायी,
ध्याता भविजन कर्म खपाई;
पामे छे शिवधाम, जिनने करोडो प्रणाम. गिरनार0

साचो लाहो शिवनो लेवा;
राजुलने संदेशो देवा;
तोरण आव्या श्याम, जिनने करोडो प्रणाम. गिरनार0

आत्मिक दान जिणंदे दीधुं,
सह सावनमां संयम लीधुं;
पाम्या केवलज्ञान, जिनने करोडो प्रणाम. गिरनार0

देवाधिदेव अहो प्रभु मारो,
एक आशरो मारे तारो;
तुंही एक आधार, जिनने करोडो प्रणाम. गिरनार0

भव भ्रमणा दुःखथी प्रभु थाक्यो,
मोक्षसुख प्रभु निकट आयो;
हवे नथी. कांई वार, जिनने करोडो प्रणाम. गिरनार0

आत्म भूमिमां जिनवर सेवा,
आपे मीठा मुक्ति मेवा;
आत्म वरे शिवनार, जिनने करोडो प्रणाम. गिरनार0

***

श्री वीतरागनुं खरूं जीवन

(राग-मारूं वतन आ मारूं वतन)

तारूं जीवन खरूं तारुं जीवन,
जीवी जाण्युं नेमनाथे जीवन;
सुतां रे जागता बेसतां ऊठतां,
हैडे रहे तारूं खूब रटन. तारू0

अशरण जगतने शरणे करवा,
थयुं सुरालयमांथी चवन. तारूं0

जन्म जरा मरणोथी दुःखी जग,
पेखी जन्म्या तुमे भरते भुवन. तारूं0

स्वरूप पूर्ण करवा काजे,
ग्रही संयम कुळ कीधुं पावन. तारूं0

घोर उपद्रवो सही मारा जिनजी,
पामी केवल जोयुं आत्म भुवन. तारूं0

लोक अलोकनां तत्त्व पिछाणी,
पाम्या शिव प्रभु गीत गावन. तारूं0

महानन्दामृत स्थान महोदय,
पाया अमृत सिद्धि सुमन. तारूं0

गिरी गुफामां नेम प्रभुजी,
संयम केवळ शिव रमन. तारूं0

कथनाक्षरी अक्षर न पावे,
अनंत गुणाक्षरी तारूं लेखन. तारूं0

गिरिनगरना वीतराग स्वामी,
दर्शन द्योने नाथ दयाळ. तारूं0

***

धन्य जीवन

(राग-ओधवजी संदेशो)

गिरी नगरना वासी नेम जिणंदजी,
थयां प्रभुनां कल्याणिक त्रण गिरनारजो;
तुज दरशनथी मारूं मन प्रसन्न थयुं,
पूरो प्रभुजी शिवपुरनी मुज आश जो. गिरि. 1

शासन प्रभुनुं सर्व धर्म शिरे वसे,
स्याद्वाद ने सात नयनो वास जो;
रत्नत्रयीना गुण अनंता ज्यां रह्यां,
धर्म भावमां दिल थयुं मम लीनजो. गिरी. 2

तारा मतमां सद्युक्ति प्रगटी रही,
मानुं तारा श्रुत सागरनी लहेरजो;
अखंड लहेरमां हर्षे जे नाची रह्या,
लेशे झटपट शिवपुर सुंदर शहेर जो. गिरी. 3

आत्म महेलमां स्थाप्या जेणे जिनवरो,
तेना घटमां सर्व शक्ति प्रकाश जो;
भवोभव होजो मुज मन तुज पदपंकजे,
पद सेवाथी शिवलक्ष्मी विलास जो. गिरी. 4

***

शांतिनाथ भगवाननो महिमा

शांतिजिनेश्वर साचो साहिब, शांतिकरण अनुकूलमें हो जिनजी
तुं मेरा मनमें तुं मेरा दिलमें,
ध्यान धरूं पलपलमें साहेबजी तु मेरा0 1. ध्यान धरूं.

भवमां भमतां में दरिशन पायो,
आशा पूरो एक पलमें हो जिनजी तुं मेरा0 2. ध्यान धरूं.

निरमल ज्योत वदनपर सोहे,
निकस्यो ज्युं चंदवादळमें हो जिनजी तुं मेरा0 3. ध्यान धरूं.

मेरो मन तुम साथे लीनो,
मीन वसे ज्युं जळमें साहेबजी, तुं मेरा0 4. ध्यान धरूं.

जिन रंग कहे प्रभु शांतिजिनेश्वर,
दीठोजी देव सकळमें हो जिनजी तुं मेरा0 5. ध्यान धरूं.

***

श्री शांतिप्रभुने शिर झूके

शांति सूरत तमारी जोतां, शिर झुके मुज लळी लळीने,
सुवर्णपुरीमां आज निहाळी, हैयडुं हरखे हळी हळीने;
शांति0 1.

तेज सरोवर मुख पर दीठां, लागे भविना हृदयमां मीठां,
दर्शन अमृत पीधुं सुखेथी, नयन कटोरा भरी भरीने;
शांति0 2.

अमोने आशा प्रभु तमारी, तुम दर्शने हर्ष अपारी,
महेर करो प्रभु हवे अमो पर, मोह दहे मुज छळी छळीने;
शांति0 3.

विश्वसेन अचिराजीके नंदन, तोडो हमारा कर्मोना फंदन,
आत्मिक आनंद लहुं अनंतो, कतल कर्मोनी करी करीने;
शांति0 4.

आत्म-भूमिमां शक्ति लेवा, प्रेमे करूं जिन-चरणोनी सेवा,
सेवाना मीठा मेवाने पामी, मुक्ति चहुं कर्म हरी हरीने;
शांति0 5.

***

श्री प्रभुजी पधारवा विषे

(राग-शेरी वळावी सज्ज करूं घेर आवोने)

मारा जीवन तणी शुद्ध शेरीए प्रभु आवोने,
हुं तो जोउ वालमनी वाट मारा घेर आवोने;
मारा चंदनना चित्त चोकमां प्रभु आवोने,
मारा आतम सरोवर घाट-मारा0

में छोडी स्वच्छंदता माहरी प्रभु0
देव चरणे कर्युं दिल डुल-मारा0

हुं ज्योत जगावुं प्रेमनी प्रभु0
हरि वेर्या आनंदना फूल-मारा0

मने व्यापी विरह तणी वेदना प्रभु0
माराथी खमी न खमाय-मारा0

मारे एक घडी एक युग थई प्रभु0
देव दरशन देवाने दयाळ-मारा0

ज्ञाननिधि ज्ञान प्रगटाववा प्रभु0
मने पावन करो धरी पाद-मारा0

तमे मारा नयनना तारला प्रभु0
मारा हैयाना अणमूला हार-मारा0

आ त्रिविध तापने टाळवा प्रभु0
संत सेवक तणा शणगार-मारा0

***

श्री तीर्थ नमन.

त्रण कल्याणिक तीहां थया, मुगते गया रे;
नेमीश्वर गिरनार, तीरथ ते नमुं रे.
समेत शिखर सोहामणो, रळीयामणो रे;
सिद्धा तीर्थंकर अनंत, तीरथ ते नमुं रे.

नगरी चंपा निरखीये, हैये हरखीये रे;
सिद्धा श्री वासुपूज्य, तीरथ ते नमुं रे.

पूर्व दिशे पावापुरी, ऋद्धे भरी रे;
मुक्ति गया महावीर, तीरथ ते नमुं रे.

शत्रुंजय ऋषभ समोसर्या, भला गुण भर्या रे;
सिद्धा मुनिश्वर अनेक, तीरथ ते नमुं रे.

अष्टापद एक दोहरो, गिरि सेहरो रे;
भरते भराव्या बिंब, तीरथ ते नमुं रे.

शाश्वति अशाश्वति, प्रतिमा छती रे;
स्वर्ग मृत्यु पाताल, तीरथ ते नमुं रे.

सुवर्णपुरी सोहामणी, रळीयामणी रे;
बिराजे सीमंधरदेव, तीरथ ते नमुं रे.
बिराजे देवगुरूशास्त्र, तीरथ ते नमुं रे.

***

दिव्य ध्वनी

वीर सभामां आज गौतम पधार्या, अमृत वरस्या मेह रे;
वीरजीनी वाणी छूटी रे.

वैशाख मासथी वादळ चड्यां, आज श्रावणे वरस्यो मेह रे;
वीरजीनी वाणी छूटी रे. . . . वीरसभामां. 1

देव दुंदुंभीनाद गगडीया, इंद्र इंद्राणी हरखाय रे;
वीरजीनी वाणी छूटी रे.

रत्न अमोलक गणधर देवश्री, शोभाव्या शासन रे,
वीरजीनी वाणी छूटी रे. . . . . वीर सभामां 2

तरस्या चातक देवमानव तिर्यंचनी, तत्त्व पिपासा छिपाय रे,
वीरजीनी वाणी छूटी रे.
संसारतापना दुःख दावानळ, एकी क्षणे बुझाय रे,
वीरजीनी वाणी छूटी रे. . . . . वीर सभामां. 3

दर्शन, ज्ञान ने चारित्र केरा, मोंघेरा फाल्या फाल रे,
वीरजीनी वाणी छूटी रे.
मोंघो मारग ज्यां मुक्ति तणो त्यां, जीवोना जूथ उभराय रे,
वीरजीनी वाणी छूटी रे. . . . . वीर सभामां. 4

धन्य नगर धन्य समवसरण, धन्य धन्य सभा नरनार रे,
वीरजीनी वाणी छूटी रे.
दिव्य ध्वनिना वह्या प्रवाह ए, धन्य दिवस धन्य रात रे,
वीरजीनी वाणी छूटी रे. . . . . वीर सभामां 5

दिव्य ध्वनिनी थोडी शी वानगी, परमागममां जणाय रे,
वीरजीनी वाणी छूटी रे.
धन्य आचार्य धन्य उपाध्याय, धन्य कृपाळु गुरूराज रे,
वीरजीनी वाणी छूटी रे. . . . . वीर सभामां 6

साक्षात् सुणवा ए दिव्य ध्वनिने, मन मारूं तलसाय रे,
वीरजीनी वाणी छूटी रे. . . . . वीर सभामां.

***

श्री सीमंधर जिन-स्तवन

(मोरा साहेबको श्री शीतलनाथ के-देशी)

सुप्रतीते हो करी थिर उपयोग के,
सीमंधर जिन वंदीए
अनादिनी हो जे मिथ्या भ्रांति के,
तेह सर्वथा छंडीए;
अविरति हो जे परिणति दुष्ट के,
टाळी थिरता साधीए;
कषायनी हो कल्मशता कापी के,
वर समता आराधीए. 1

जंबुने हो महाविदेह जिनराज के,
सीमंधरनाथ अवलोकीए;
जस नामे हो प्रगटे गुणराशि के,
ध्याने शिवसुख विलसीए;
अपराधी हो जे तुजथी दूर के,

1 भूरी भ्रमण दुःखना धणी;
ते माटे हो तुज सेवा रंग के;
होजो ए इच्छा घणी; 2

मरूधरमें हो जिम सुरतरू लुंब के,
सागरमें 2 प्रवहण समो;

---

1. बहु 2. जहाज जेवो.

भव भमतां हो भविजन आधार के,
प्रभु दरिसण सुख अनुपमो;
आतमनी हो जे शक्ति अनंत के,
तेह स्वरूप पदे धर्या;
पारिणामिक हो ज्ञानादि धर्म के,
स्वस्वकार्य पणे वर्या. 3

अविनाशी हो जे आत्मांद के,
पूर्ण अखंड स्वभावनो;
निज गुणनो हो जे वर्तन धर्म के,
सहज विलासी दावनो;
तस भोगी हो तुं जिनवर देवके,
त्यागी सर्व विभावनो;
श्रुतज्ञानी हो न कही शके सर्व के,
महिमा तुज प्रभावनो. 4

निःकामी हो निःकषायी नाथ के,
साथ होजो नित तुम्ह तणो;
तुम आणा हो आराधन शुद्ध के,
साधु हुं साधकपणो,
जिनराजनी हो जे भक्ति एकत्व के,
तुज सेवक पद कारणो. 5

***

धून.

भयहर भयहर भज भगवान,
सुरनर मुनिवर धरत है ध्यान.
देव अमारा श्री अरिहंत.

गुरू अमारा गुणीयल संत,
ॐ गुरु ॐ गुरु ॐ गुरुदेव,
जय गरु जय गुरु जय गुरुदेव

ऋषभ जय प्रभु पारस जय जय,
महावीर जय गुरु गौतम जय जय.

सीमंधरकी जय कुंदकुंद केरी जय,
गुरुदेव कृपाळु की जय जय जय.

***

श्री विमलनाथ स्वामी

दुःख दोहग दूरे टळ्यां रे, सुख संपदशुं भेट;
धींग धणी माथे कियोरे, कुण गंजे नर खेट,
विमलजिन, दीठां लोयण आज, मारां सीध्यां वांछित काज.
विमल जिन दीठां. 1

चरण कमळ कमला* वसेरे निर्मल थिर पद देख;
समल अथिर पद परिहरी रे, पंकज पामर पेख. वि0 दी0 2

---

* लक्ष्मी.

मुज मन तु पद पंकजे रे, लीनो गुण मकरंद,
रंक गणे मंदरधरा* रे, इंद्र चंद्र नागिंद्र. वि0 दी0 3

---

* मेरू-सुवर्णाचल भूमि

साहिब समरथ तुं धणीरे, पाम्यो परम उदार,
मन विशरामी वालहोरे, आतमनो आधार. वि0 दी0 4

दरिसण दीठे जिन तणुं रे, संशय न रहे वेध,
दिनकर करभर पसरतारे, अंधकार प्रतिषेध वि0 दी0 5

अमीय भरी मूरति रची रे, उपमा न घटे कोय,
शांत सुधारस झीलती रे, निरखत तृप्ति न होय. वि० दी० 6

एक अरज सेवक तणी रे, अवधारो जिनदेव,
कृपा करी मुज दीजीये रे, आनंदधन पद सेव. वि० दी० 7

***

श्री पार्श्वजिन स्तवन.

(कडखानी देशी-प्रभातिया)

सहज गुणआगरो, स्वामी सुख सागरो,
ज्ञान वैरागरो प्रभु सवायो;
शुद्धता एकता, तिक्षणता भावथी,
मोह रिपु जिती जय पडह वायो. स० 1

वस्तु निज भाव, अविभास निःकलंकता,
परिणति वृतिता करी अभेदे;
भाव तादात्मयता शक्ति उल्लासथी,
संतति योगने तुं उच्छेदे. स० 2

दोष गुण वस्तुनी लखिय यथार्थता,
लही उदासीनता अपर भावे;
ध्वंसि तज्जन्यता भाव कर्त्तापणुं,
परम प्रभु तुं रम्यो निज स्वभावे. स० 3

शुभ अशुभ भाव; अविभास तहकीकता,
शुभ अशुभ भाव, तिहां प्रभु न कीधो;
शुद्ध परिणामता, वीर्य कर्ता थई,
परम अक्रियता अमृत पीधो. स० 4

शुद्धता प्रभु तणी, आत्मभावे रमे,
परम परमात्मा तास थाये;
मिश्र भावे अछे त्रिगुणनी भिन्नता,
त्रिगुण एकत्व तुज चरण आये. स० 5

उपशम रस भरी सर्व जन शंकरी,
मूर्ति जिनराजनी आज भेटी;
कारणे कार्य निष्पत्ति श्रद्धान छे,
तिणे भव भ्रमणनी भीड मेटी. स 0 6

नयक खंभायते, पार्श्व प्रभु दर्शने,
विकसते हर्ष उत्साह वाध्यो;
हेतु एकत्वता रमण परिणामथी,
सिद्धि साधकपणो आज साध्यो. स 0 7

आज कृतपुण्य धन्य दिन माहरो थयो,
आज नरजन्म में सफळ भाव्यो;
देवचंद्र स्वामी त्रेवीशमो वंदीओ,
भक्तिभर चित्त तुज गुण रमाव्यो. स 0 8

***

जिन स्तवन

आज प्रभु दर्शनसे दिलको आराम है,
दिलको आराम है, वो मुक्ति का धाम है. आज 0 1

धर्म जिणंदकी मूर्ति मनोहर,
देखके देदार जिन, बने दिलाराम है. आज 0 2

राग और द्वेषकी लेश न छाया,
हास्यादिक वारा, और हटाया काम है. आज 0 3

ज्ञान और दर्शनके घातक निवारे,
अंतराय त्यागी क्रिया, केवल विश्राम है. आज 0 4

झळहळती ज्योत देख भवि मन मोहे,
सुणे जो वाणी लहे, शिवपुर काम है. आज 0 5

करी उपकार प्रभु शिवपुर सिधाये,
आतमभूमि विभु, आनंदका धाम है. आज 0 6

***

श्री कुंदकुंददेवने विनंती

एवा कुंदप्रभु अम मंदिरीये,
एवा आतम आवो अम मंदिरीये.

जेणे तपोवन तीर्थमां ज्ञान लाध्युं
जेणे वन जंगलमां शास्त्र रच्युं;
ॐकार ध्वनिनुं सत्व साध्युं–एवा0

जेणे आत्मवैभवथी तत्त्व सींच्यां,
वळी संयम गुच्छमां गुंजी रह्या;
जेणे जीवनमां जिनवर चिंतव्या–एवा0

महा मंगळ प्रतिष्ठा महा ग्रंथनी,
वळी अगम निगमना भावो भरी;
दीसे सार समयनी रचना रूडी–एवा0

श्री सीमंधर देवना दर्शन करी;
सत्य संदेशा लावनार चिंतामणि,
प्रभु श्रुतधारी कळिकाळ केवळी. –एवा0

हे गुणनिधि गुणागारी प्रभु,
तारी आदर्शता न्यारी न्यारी प्रभु;
हुं पामर ए शुं कथी शकुं. –एवा0

प्रभु कुंदकुंददेव सुवास तारी,
प्रसरावी मुमुक्षु हृदय मांही;
कानदेवे मीठां मेह वरसावी. –एवा0

***

गुरुदेवना ज्ञानवाजा

वागे छे ज्ञान वाजा गुरुराजना मंदिरीये गुरुराजनां मंदिरीये
स्वाध्याय–मंदिरीये वागे छे ज्ञान वाजा गुरुदेवां मंदिरीये
ज्ञानी गुरूजी बिराजे, स्वाध्याय मंदिर शोभावे,
उपदेश रूडो आपे, भव्य जीवने उद्धारे. . . . . वागे0 1

प्रभु सुवर्णपुरी मांही, अचिंत्य ज्ञान खीलवी,
सूक्ष्म न्यायो प्रकाशी, ज्ञान ज्योतिने जगावी. . . . . वागे0 2

मुखथी छूटे छे ध्वनि, अमृत समी ए वाणी,
सुणतां आनंद थाये, हृदय विकसीत थाये. . . . . वागे0 3

दिव्य ध्वनिनो नाद छूट्यो, चारे दिशाए प्रसर्यो,
महिमा करुं शी तेरी ? अल्पमति छे मेरी. . . . . वागे0 4

श्री तीर्थधाम मांही, जयकार नाद गाजे,
अनुभव प्रकाशी आजे, सत् वस्तुने बतावे. . . . . वागे0 5

शुद्ध ज्ञान ज्ञाता मांही, श्रद्धा प्रतीत करावे,
अकर्तापणुं छे त्हारूं, ए वातने मलावे. . . . वागे0 6

प्रभु सुवर्णपुरी मांही, ज्ञान सरिता वहावी,
झणकार गाजे गगने, देवेन्द्रने सुणावे. . . . . वागे0 7

भगवान कुंदकुंदनुं, शासन वर्ते छे जयवंत,
तुज कुळने दिपाव्युं, प्रभु कहानदेवे विजयवंत. . . . वागे0 8

जगत शिरोमणि छो, जग पूज्य वंदनीक छो,
वीतराग देव वीरना, प्रभु आप लघु नंदन छो. . . . . वागे0 9

इन्द्रो अने देवेन्द्रो, मांहो मांहे गान करता,
आ भरतक्षेत्र मांही, ए वीर कोण जाग्यो ? वागे0 10

चालो सहु मळीने, ए वीर वंदन जईए.
ज्ञायक स्वरूप, सुणीने जीवन कृतार्थ करीए. . . . . वागे0 11

देवदुंदुभि वागे, सुरपति स्वर्गेथी ऊतरे,
भगवान कुंदकुंदना, संदेशा लईने आवे. . . . . वागे0 12

भक्ति करवाने तारी, शरणे आव्यो हुं वारी,
दीन हाथ ग्रहो कृपाळु, मुज रंकने ठगारी. . . . वागे0 13

***

श्री सीमंधर जिन स्तवन

(राग-पूछो मने तो हुं कहुं)

साचुं पूछो तो गुरुजी कहे जगनाथ ! हो तो आवा हो;
ए सर्वज्ञता वीतरागथी, भूनाथ ! हो तो आवा हो.
ए शुद्ध स्फटिक देदार धरी, शरद चंदननी होड करी;
ए शुक्ल ध्याने रही खरी, उज्वलता हो तो आवी हो.
साचुं पूछो तो शास्त्र कहे जगनाथ हो तो आवा हो. 1

ए राग नहीं ज्यां द्वेष भी नहीं, सुधारस ज्यां हे सही;
ए नयने तागे जोवा चही, किरतार ! हो तो आवा हो.
साचुं0 2

ए अमृत रसे जे छे भरी, सुवर्णपुरीमां आज स्मरी;
ए दुःख जाये झरी झरी, सुखकार ! हो तो आवा हो.
साचुं0 3

ए उपशमभरी प्रभु मूर्ति मळी, तरण तारण छे वळी;
भक्तोने आपे मुक्ति भली, दातार ! हो तो आवा हो.
साचुं0 4

***

वीतराग जिन स्तवन

(भारतका डंका आलममें-ए राग)

प्रभु जिन भजो प्रभु जिन भजो,
चिन्तामणी चित्त सदा ए सजो;
गुणगणनो प्रभुमां पार नहीं,
एवा प्रभु मुज शिरताज हजो.....प्रभु0 1

जिनराज चरण शरण ग्रहिये,
तो जल्दी शिवपुर सुख लहिये;
चोरासी लाख तब जाय टळी,
निज आत्म दशा प्रगटे सघळी.....प्रभु0 2

मनमंदिरमां प्रभु वास करे,
द्रति वायु जेम भव पाथ तरे;
प्रभु नाम रटे सब दुःख कटे,
भव भ्रमणा जीव की सर्व हटे....प्रभु0 3

जडवाद बधो दीधो वामी,
प्रभु विदेहे क्षेत्रतणा स्वामी;
बनी योगी काम लीधो दामी,
ए जिनराजनां चरणो पामी.....प्रभु0 4

हुं जिनवर गुण गीतगान करूं,
ए रूपी अमृत पान करूंd

कर्मोनुं विषम विष हरूं,
जन्ममरण भवजाळ जरूं. . . . . प्रभु0 5

कहे तुज सेवक उलसी उलसी,
जाओ कर्म बधां मुजथी निकसी;
जिन ध्यान धरे ते नर न डरे,
हट जाओ पापी कर्म अरे. . . . . प्रभु0 6

***

अभिनंदन

(राग-गझल)

घडी धन आजकी सबको मुबारिक हो मुबारिक हो,
हुए जिनराज के दर्शन, मुबारिक हो मुबारिक हो. टेक.
कहीं अरचा कहीं चरचा, कहीं जिनराज गुणगायन,
महातम जैन शासन का, मुबारिक हो मुबारिक हो. 1

चंवर छत्रादि सिंहासन, प्रभाकर श्रेष्ठ भामंडल,

अनुपम शांतिमुद्रा ये, मुबारिक हो मुबारिक हो. 2

सफल हो कामना सेवक, यही अरदास है स्वामिन्,
श्री गुरुदेव सुजिन शासन, मुबारिक हो मुबारिक हो. 3

***

श्री महावीर जिनपद

(राग गझल-प्रभुनो प्रेम त्यां होजो)

प्रभुनुं ध्यान त्यां होजो, शिरे फरमान त्यां होजो;
तमारी शिवभूमि ज्यां, अमारो वास त्यां होजो. प्र० 1

नथी रागी निरागी छे, नथी द्वेषी खूबी जिननी;
रहीशुं त्यां सेवीशुं त्यां जीवन उपहार त्यां होजो. प्र० 2

फल्यां श्रीवीरना चरणो, थतां ज्यां ध्याननी केली;
जनम ए धाममां मारो, दयाना नाथ त्यां होजो. प्र० 3

अनंत सुख ज्यां भरियुं, खूबी ए पुण्य भूमिनी;
प्रभु ! ए धाम दिखादो; सेवक सुखकार त्यां होजो. प्र० 4

***

श्री परमात्मानी स्तवना

(त्रोटक छंद)

अरिहंत नमो भगवंत नमो,
परमेश्वर श्री जिनराज नमो;
प्रथम जिनेश्वर प्रेमे पेखत,
सिध्यां सडळां काज नमो. अ० 1

प्रभु पारंगत परम महोदय,
अविनाशी अकलंक नमो;
अजर अमर अद्भुत अतिशय निधि,
प्रवचन जलधि मयंक* नमो अ० 2

---

* चंद्र

तिहुयण भवियण जिन मनवंछिय,
पूरण देवरसाल+ नमो;
लळी लळी पाय नमुं हुं भावे,
कर जोडीने त्रिकाळ नमो; अ० ३

+. देवतरू-कल्पतरू

सिद्ध बुद्ध तुं जग जन सज्जन,
नयनानंदनदेव नमो;
सकल सुरासुर नरवर नायक,
सारे अहोनीश सेव नमो. अ० ४

तुं तीर्थंकर सुखकर साहिब,
तुं निष्कारण बंधु नमो;
शरणागत भविने हितवत्सल,
तुंहि कृपारस सिंधु नमो. अ० ५

केवळज्ञानदर्शे दर्शित,
लोकालोक स्वभाव नमो;
नाशित सकल कलंक कलुषगण,
दुरित उपद्रव भाव नमो. अ० ६

जग चिंतामणि जगगुरु-
जगहित कारक जगजननाथ नमो;
घोर अपार महोदधि तारण,
तुं शिवपुरनो साथ नमो. अ० ७

अशरण शरण नीराग निरंजन,
निरुपाधिक जगदीश नमो;
बोधि दियो अनुपम दानेश्वर,
श्री सद्गुरुदेव नमो. अ० ८

***

श्री सीमंधर प्रभु स्तुति

सीमंधरचरणं अशरणशरणं भ्रम आताप हर रविशशि-किरणं
जयवंत युगलपद जय करणं-मम सीमंधरदेव सदा शरणं-1

पद सकलकुशलवल्ली समध्यावो, पुष्कर संवर्तमेघ भावो;
सुर गो सम ज्ञानामृत झरणं-मम 0 2

पद कल्प-कुंभ कामित दाता, चित्रावली चिंतामणि ख्याता;
पद संजिविनी हरे जर मरणं-मम 0 3

पद मंगल कमला आवासं, हरे दासना आशपाश त्रासं;
चंदन चरणं चिंतवृति ठरणं-मम 0 4

दुस्तर भव तरण काज साजं, पद सफरी जहाज अथवा पाजं;
मही महीधरवत् अभराभरणं-मम 0 5

संसार कांतार पार करवा, पद सार्थवाह सम गुण गरवा;
आश्रित शरणापन्न उद्धरणं-मम 0 6

सीमंधर देवपद पुनितं, मुमुक्षु जनमन अमित वित्तं;
गंगाजलवत् मनमल हरणं-मम 0 7

पदकमल अमल मम दिलकमलं, संस्थापित रहो अखंड अचलं
रत्नत्रय हरे सर्वावरणं-मम 0 8

***

जिनजीनी वाणी

(राग-आशा भर्या अमे आवीया)

सीमंधर मुखथी फूलडां खरे,
एनी कुंदकुंद गूंथे माळ रे,
जिनजीनी वाणी भली रे,
वाणी भली मन लागे रळी,
जेमां सार-समय शिरताज रे,
जिनजीनी वाणी भली रे. . . . सीमंधर

गूंथ्यां पाहुड ने गूंथ्युं पंचास्ति,
गूंथ्युं प्रवचनसार रे,
जिनजी वाणी भली रे,
गूंथ्युं नियमसार, गूंथ्युं रयणसार,
गूंथ्यो समयनो सार रे,
जिनजीनी वाणी भली रे. . . . . सीमंधर

स्याद्वाद केरी सुवासे भरेलो,
जिनजीनो ॐकारनाद रे,
जिनजीनी वाणी भली रे,
वंदु जिनेश्वर, वंदुं हुं कुंदकुंद,
वंदुं ए ॐकारनाद रे,
जिनजी वाणी भली रे. . . . सीमंधर

हैडे हजो, मारा भावे हजो,
मारा ध्याने हजो जिनवाणरे,

जिनजीनी वाणी भली रे.
जिनेश्वरदेवनी वाणीना वायरा,
वाजो मने दिनरात रे,
जिनजीनी वाणी भली रे. . . . सीमंधर

***

अपूर्व उत्साह

(गाजे पाटणपुरमां-ए राग)

सुंदर स्वर्णपुरीमां स्वर्ण-रवि आजे ऊग्यो रे,
भव्यजनोना हैये हर्षानंद अपार;
श्री सीमंधर प्रभुजी पधार्या छे अम आंगणे रे.

(वसंततिलका)

निर्मूळ मोह करीने प्रभु निर्विकारी,
छे द्रव्यभाव सद्गुना परिपूर्ण साक्षी,
कोटी *सुधांशुं करतां वधु आत्मशांति,
कोटी रवीन्द्र करतां वधु ज्ञानज्योति.

---

*. सुधांशु = चंद्र

जेनी मुद्रा जोतां आत्मस्वरूप लखाय छे रे,
जेनी भक्तिथी चारित्रविमळता थाय;
एवा चैतन्यमूर्ति प्रभुजी अहो ! अम आंगणे रे. . . . . सुंदर

सद्धर्म वृद्धि वर्तो जयनाद बोल्या,
श्री कुंदना विरहताप प्रभु निवार्या,
+सप्ताह एक वरसी अद्भुत धारा,
श्री कुंदकुंद हृदये परितोष पाम्या.

+ सप्ताह = अठवाडीयुं

जेनी वाणी झीली कुंदप्रभु शास्त्रो रच्यां रे,
जेनी वाणीनो वळी सद्गुरु पर उपकार;
एवा त्रण भुवनना नाथ अहो ! अम आंगणे रे. . . . . सुंदर.

पूर्वज्ञ छे गणधरो प्रभु पादपद्मे,
सर्वज्ञ केवळी घणा प्रभुना निमित्ते;
आत्मज्ञ संतगणना हृदयेश स्वामी,
सीमंधरा ! नमुं तने शिर नामी नामी.

जेना द्वारा जिनजी आव्या, भव्ये ओळख्या रे,
ते श्री कानगुरुनो पण अनुपम उपकार,
नित्ये देव-गुरुनां चरणकमळ हृदये वसो रे. . . . . सुंदर

***

श्री पार्श्वप्रभुनी स्तुति

उपशम रस वर्षे रे प्रभु तारां नयनमां,
हृदयकमलमां दया अनंत उभराय जो;
वदनकमलपर प्रसन्नता प्रसरी रही,
चरणकमलमां भक्तिरस रेलाय जो. उपशम० 1

करकमलमां कृपारस पूरण वहे,
शिर पर मूक्यां ऊपजे लब्धि अनंत जो;
चार ज्ञान चउदश पूर्वी प्रभु गणधरो,
एह कृपाथी पाम्या पूर्णानंद जो. उपशम० 2

अनंत चतुष्टय मंडित मुद्रा ताहरी,
भव्यजीवोने हितकारी भगवान जो;
समकित पामी स्वामी आप चरणतणुं,
हृदयकमलमां धरता निर्मळ ध्यान जो. उपशम० 3

ए शक्तिथी उपादान बळ बहु वधे,
अहोनिश अंतर प्रेमीजननां सिंचाय जो;
भाव अपूरव आत्मप्रदेशे उल्लसे,
जनवन जलधि अल्प भवे उतराय जो. उपशम० 4

अत्यंत मंद कषाय विशुद्ध परिणामथी,
चित्त प्रसन्नता लब्धि ऊपजे अतुल जो;
अचिंत्य शक्ति चैतन्य ज्योति जळहळे,
सदैव वर्ते शुद्ध मंगळ मंजुल जो. उपशम० 5

***

सद्गुरु करकमळथी स्थापना विषे

(ज्ञान चतुर दर्शन दिन आजनो-ते राग)

सीमंधर प्रभु नेमनाथ शांति जिणंदजी, महावीर प्रभु पद्मप्रभुदेव
नाथ ! प्रतिष्ठा सद्गुरु करकमळथी रे. 1

विदेही प्रभु पधार्या सुवर्णपुरमां रे,
साक्षात् सत् वृष्टि थई आज. प्रभु प्रतिष्ठा. 2

सुरेन्द्र नरेन्द्र देव मनावो रे,
विभु महोत्सवना जयनाद गाय. प्रभु प्रतिष्ठा. 3

इन्द्राणी पुरे छे मोती साथीआरे,
अहो ! अहो ! मंगळ स्थापना थाय. प्रभु प्रतिष्ठा. 4

सद्गुरु स्थापना करे ने दिव्य दृश्य लागे,
दीसे भाव अनुपम आज. प्रभु प्रतिष्ठा. 5

श्री देवगुरु साथे मळ्या रे,
त्रण भुवनमां सुरनाद थाय. प्रभु प्रतिष्ठा. 6

सद्गु भक्तो भावेथी संगे मळी रे,
बोले धन्य धन्य कृत दिन आज. प्रभु प्रतिष्ठा. 7

उपशम रस वरसे प्रभु नेणले रे,
नाथ ? मुख पुनमकेरो चंद. प्रभु प्रतिष्ठा. 8

विभु शांत सुधारस झीलती रे,
निरखतां तृप्ति नव थाय. प्रभु प्रतिष्ठा. 9

आज रत्नना राशि प्रभु आवीया रे,
आव्या आव्या छे त्रिलोकी नाथ. प्रभु प्रतिष्ठा. 10

प्रभु गुण कथे सहस्त्र भांत सुरपति रे,
नाथ ! महिमा तणो नहिं पार. प्रभु प्रतिष्ठा. 11

***

श्री पद्मप्रभुदेवनी स्तुति

(वसंततिलका)

भव्योरूपी कमळने विकसावनारा,
भावो समस्त जगना वळी जाणनारा;
ते पद्मनां चरणमां मधुकर बनीने
रेवुं गमे अहर्निशे अमने रमीने. 1

संध्यासमे रवि जतां शशी ब्हार आवे,
बन्ने तणां किरण ज्युं नभने दीपावे;
देवो तणा नमनथी थई तेवी कांति,
तेवा श्री पद्मप्रभुनां चरणे ज शांति. 2

अंभोनिधि विधु थकी प्रसराय जेवो,
स्याद्वाद विस्तृत कर्यो जगमांही तेवो;
ते प्रेमथी प्रमणीए प्रभु पद्मस्वामी,
मुक्ति महंत सुखदायक आज पामी. 3

फीक्को फडे रवि थतां जग चंद्र ते क्यां ?
ने शुक्ल ध्यान सरखुं प्रभु मुखे ते क्यां ?
जे देवता मनुजना मनने हरे छे,
ते नाथ पद्मचरणे चित्तडुं ठरे छे. 4

हस्ते रही अमल नीर जणाय जेवुं,
ज्ञाने करी नीरखतां जग सर्व तेवुं;
जेनो प्रताप महिमा नवि चिंतवाए,
तेवाश्री पद्मचरणे मन शांत थाए. 5

वर्षावीने नवीन मेघतणी ज धारा,
प्राणी तणो पूरण हर्ष वधारनारा;
स्याद्वाद अमृत जरा अम ऊर नाखो,
ने चरणमां शरण पद्मजिनेश राखो.

***

श्री जिन स्तवन

हुं तो मूरति निहाळुं मारा श्यामनी रे,
मारा श्यामनी रे, नेमिनाथनी रे. . . . हुं तो.

अंतर के कपाट खोल हृदयमें ऊठे हिलोर,
वंदन आज क्रोड क्रोड;
हुं तो चरण सेवा करूं मारा श्यामनी रे. . . . . हुं तो. 1

करी ले करम संहार, तजी दे भ्रमण संसार,
चरण नमुं वार वार;
सेवक भक्ति जमावुं मारा श्यामनी रे. . . . . हुं तो. 2

***

श्री जिन स्तवन

प्यारा छो प्राणथकी व्हाला जिणंदजी,
जुवो छे शेनी वाटरे-वीर मारा पार उतारजो;
प्रभु मारा पार उतारजो. प्यारा
अनादि अज्ञानथी पापो कीधां छे,
कहेवी शु मारी वात रे. वीर० 1

परभाव प्रपंचना आ रे जीवनमां,
नेत्र अंजन अमी छांट रे. वीर० 2

डगले ने पगले प्रभु, आपने संभारूं,
अंतरना जाय उचाट रे. वीर० 3

पतित पावन मारा जीवन उद्धारक,
हैयामां वसजो नाथ रे. वीर० 4

दर्शन-पूजन तारां, भावे करीने,
जावे सेवक मुक्तिघाट रे. वीर० 5

***

श्री जिन स्तवन

मूर्ति दीसे छे प्रभु आजनी रळियामणी,
दीठा में सीमंधर स्वाम रे;
जिनवर भेटो अलबेलडा. 1

ज्ञान दिवाकर, वंदन करतां;
सिद्धयां अमारा काम रे. जिनवर. 2

उज्जवळ मंदिरो नयने निहाळतां,
चित्त पामे छे विशराम रे. जिनवर. 3

समवसरण शोभा ने कुंदकुंद स्वामी,
दर्शन कीधां अभिराम रे. जिनवर. 4

स्वाध्याय मंदिर ने सद्गुरु स्वामी,
दर्शन रूडां मंगळकार रे. जिनवर. 5

तिमिर हठाकर, तेज दिखाया,
मोह मदिरा (नाखी) वाम रे. जिनवर. 6

पवित्र तीर्थवर स्पर्शन करजो,
लेजो प्रभात ऊठी नाम रे. जिनवर. 7

धर्म तमारो प्रभु दिल मेरे वसियो,
सेवक लेवा शिवधाम रे. जिनवर. 8

***

श्री शांतिनाथ जिन स्तवन

लेजो लाखेणी सेवा जिनराय, आजे आनंजथी
प्रभु शांति जिणंदजी सोहाय-आजे0
तारी शीतळ आंखोथी दुःखो बुझाय. . . . . आजे0 1

ज्यारे आनंदना उमळका हैये ऊठे,
त्यारे अंतरना नंदनवन खीली रहे;
शुद्ध जीवननी लहेरो लुंटाय. . . . . आजे0 2

मन मोहे छे आत्माना भावे सही,
बनी शोभा सेवकने बोलावी रही;
दीलने दृष्टिएथी न भुलाय. . . . आजे0 3

***

श्री जिनस्तवन

आवो भेटोने श्री जिनराय, शोभे तीर्थक्षेत्रे
आजे ज्योति जिनंद झलकाय, जो जो अंतरथी
मारूं मस्तक चरणोमां झुकाय, बोलो जय नाथनी आवो. 1

मारा जीवननी जमुनामां कल्लोल ठठे,
प्रभु भक्तितणा मंजुलमन आजे हसे;
जाणे आत्मतणी ज्योति मिलाय. . . . . शोभे 2

तरो अंतरना आनंदथी भक्ति ग्रही,
नथी बीजे जवानुं छोडीने कही;
गुरु झंडाने जगमां फरकाय. . . . . शोभे.

मीठा आनंदना वायरा फेलाय. . . . . शोभे. 3

***

श्री जिन स्तवन

के मारा जिनवरजीनी जोड, जगमां जोतां मळशे ना,
एना शुद्ध जीवननी होड, कोई ईश्वर करशे ना. के0 1

नीरागी देवने नित्य भज्या में,
काम क्रोधना त्यागी सज्या में;
मारा भवना बंधन छोड,
भोगी देव भजशो ना. . . . . के मारा0 2

नाथ मुक्तिमां म्हाले छे प्यारो,
सहु देवोथी शोभे छे न्यारो;

आशा पुर सेवकनी कोड,
आजे निराश करशो ना. . . . . के मारा0 3

***

श्री जिन स्तवन

प्रभु श्री वीरतणां गुणगान, गावो हरखी हरखीने;
तारा दिलमां मंजुलतान, वागे हरखी हरखीने. -प्रभु 1

वदननां अमृत सरीखां पान, पीलो हसी हसीने;
थाशो मुक्ति स्वरूप महेमान, हसजो नीरखी नीरखीने. -प्र0

तुं रागी देवोना फंदमां भूलीश ना तुज भान,
रंग खील्या छे विचित्र जगमां, चूकीशना तुज ध्यान,
सेवकना साचा एक महावीर ! वंदु नमी नमीने;
मारा आतमना सुकान, तारो हरखी हरखीने;
मारा अंतरमां मस्तान, वसियो हरखी हरखीने. -प्र0

***

श्री जिन स्तवन

प्रभुजी तुमने तेज दिखाया,
शुद्ध जीवनकी ज्योति बताया;
वंदन हो जिनराज साजन. -वंदन. 1

समकित पाये, महेल चणाया;
मुक्ति बसाया, आत्म सुहाया. -वंदन. 2

प्रभु मुख वनमें, मोर बनाया;
नाच नचाया, धन्य बनाया. -वंदन. 3

स्नेह भर्यां सनमान करायां,
मन विकासाया, अंतर बिछाया. -वंदन. 4

पंथ भूले को पंथ बताया,
तिमिर हठाया तेज दिखाया. -वंदन. 5

आनंद आनंद अद्भुत पाया,
ध्यान लगाया, आत्म सवाया. -वंदन. 6

***

श्री सीमंधर जिन स्तवन

(नागरवेलीयो रोपाव-राग)

मारा आतमनो शणगार, तुं हि एक तारणहार,
साचो त्हारो आधार, तुहि एक तारणहार;
सत्यदेवी नंदन रूडो,
विषय भुजंग गरूडो;
श्रेयांस नृप दुलार. –तुंहि0 1.

समोसरणे जिनपति राजे,
त्रण लोकनी ठकुराई छाजे;
त्हारी वाणी उदार. –तुंहि0 2

त्हारी निर्मळ सोहे काया,
मने लागी त्हारी माया;
छोडुं न छेडो आ वार. –तुंहि0 3

इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र देवा,
करे सेवा शिवपद लेवा;
सघळा देवनो सरदार. –तुंहि0 4

सुवर्ण मंडन स्वामी,
सीमंधर अंतरजामी,
सेवक पार उतार. –तुंहि0 5

***

श्री आदिजिन स्तवन

(झंडा उंचा रहे हमारा-राग)

ऋषभ जिनेश्वर विभु जगसारा,
आदि जिनेश्वर आनंदकारा,
केवलनाणी तुंहि गुणखाणी,
अमीरसवाणी पीवे भवि प्राणी;
दुःख हरनारा सुख करनारा-आदि. 1

समवसरणे तुज रिद्धि निहाळी,
भव्य जीवोए पाप पखाळी,
मुक्ति पामी जय जयकारा.-आदि. 2

महा भोगी तुंहि तुंहि महा योगी,
महा ज्ञानी तुंहि महा वैरागी;
अचरिज जीव जीवन जीवनारा.-आदि. 3

बडभागी तुंहि तुंहि वीतरागी,
तुम दर्शननी लगनी लागी;
तुम सम नहि कोई जग आधारा-आदि. 4

त्रण भुवननी ठकुराई त्हारे,
दीन दुःखियो प्रभु शरणे आवे,
आशा पुरो सेवकनी प्यारा-आदि. 5

***

श्री वीर जिन स्तवन

(नागरवेलीयो रोपाव-राग)

श्री वीर प्रभु जिनराज मेरी नैयाको तारो;
तारो तारो ने महाराज मेरी नैयाको तारो—श्री0

तुंहि ज्ञाता त्रिभुवन त्राता,
तुंहि दाता जग विख्याता;
तुंहि शासनका शिरताज-मेरी0 श्री वीर.

तुंहि प्रभु देवाधिदेवो,
प्रभु कोण छे त्हारा जेवो;
तुंहि जिन भवोदधि झाझ. –मेरी0 श्री वीर.

तुमे छो प्रभु समरथ स्वामी,
तुंहि निर्मम ने निष्कामी;
प्रभु राखो मोरी लाज. –मेरी0 श्री वीर.

श्री गौतम गणधर आव्या,
पछी आप समान बनाव्या;
आप्युं आप्युं अमृत राज. –मेरी0 श्री वीर.

***

श्री वीर जिन स्तवन

(नागरवेलीयो रोपाव-राग)

माता त्रिशलाके नंद, मेरे बंधनको टालो;
व्हाला वीरजी सुखकंद मेरे बंधनको टालो—माता

तुंहि त्रिभुवनपति कुल तिलो,
तुंहि जिन मुनिपति गुण नीलो;
तेरा ध्यानसे आनंद.—मेर० माता

तुं गति मति जगदाधारो,
तुंहि गुण रत्न भंडारो;
प्रभु नाथ वंश नभचंद्र—मेरो० माता.

तुंहि प्रभु है शिवसुख दाता,
तुंहि माता पिता है भ्राता;
तुंहि सेवित सुरनर वृंद—मेरे० माता

तुंहि शंकर ब्रह्मा विष्णु,
तुंहि अजोड है जग विष्णु;
तोडो सेवक के भवफंद.—मेरे. माता०

***

श्री जिन स्तवन

भक्ति भेटणुं लई आयो, अरिहंतका गुण गायो,
तुमारा घडी घडी नाम रटीने
आनंद मंगल पायो. –भक्ति

तुम सम थावे चेतन राजा,
अंतर मेल जो जावे;
वीतरागी तुमशुं मीलकर,
एक ज ध्यान में ध्यायो. –भक्ति

केवल दर्शन ज्ञानके धारक,
शिव सुखको ही सोहावो;
तुम दर्शामृत पान पीयाकर,
कबही न मेंही धरायो. –भक्ति

***

श्री सीमंधर जिन स्तवन

महाविदेहना वासी, विभुने वंदु वारंवार,
भावेथी भेटीने, विभुने वंदु वारंवार;
मनहर मूरति नाथ तमारी,
नीरखतां आनंद अपारी,
शिव सुखनी दातार. –विभुने0 1

मूर्ति तमारी अमीरस वर्षे,
चंद चकोर जेम मुज मन हर्षे,
पेखी गुण भंडार. –विभने0 2

सुखकर छे प्रभु पाय तुमारा,
रात दिन सेवुं सुखकारा;
आतमने हितकार. –विभुने0 3

ओगणीसो सताणुं सारी,
फागण सुदी बीज सुखकारी;
भेट्या जिन मनोहार. –विभुने0 4

आत्मानंद सम सुख देनारा,
अमृतपद आपो मुज प्यारा;
भक्त मागे आवार. –विभुने0 5

***

श्री सीमंधर जिन स्तवन

(लाखो प्रणाम-राग)

सुवर्णपुरे सीमंधर प्रभुजी, आपो अमृतराज
केवळनाणी जिन प्रभुजी, आपो अमृतराज
जन पीडा हरनारी त्हारी,
मूर्ति दीसे मंगलकारी;
श्री सीमंधर जिनराज. –प्रभुजी0 1

सुख देनारूं आनन त्हारूं,
चंद्र तणी शोभा हरनारूं;
निरखी सिध्यां काज. –प्रभुजी0 2

कृपा भरेलां नेत्र तमारां,
देखी हरखे हैया हमारां;
फळियो सुरतरू आज. –प्रभुजी0 3

स्वर्ग मोक्ष फळे जेनाथी,
एवा जिनजी मळ्या छे साथी;
भव जलधिमां झाझ. –प्रभुजी0 4

वीतरागी निर्मोही देवा,
हे प्रभु तुज चरणनी सेवा;
मागुं निशदिन राज. –प्रभुजी0 5

***

श्री जिन स्तवन

मीठी लागे छे मने जिननी उपासना
टाळे ए सघळा विभाव रे,
अरिहानी प्यारी उपासना;
अनादि काळना दुष्ट अज्ञाननो,
निश्चय करे ए नाश रे. –अरिहानी0

कीधा विदारण मिथ्यात्व मोहने,
सरजावे समक्ति सार रे. –अरिहानी0

वेगे विदारी निश्चय ए वासना,
काढे शुभाशुभ भाव रे. –अरिहानी0

अनुक्रमे जिनमां नित्यनी उपासना,
आपे ए अमृत आवास रे. –अरिहानी०

मीठी लागे छे मने जिननी उपासना.

***

श्री जिन स्तवन

के मारा तुम दर्शननां कोड, प्रभुजी पूरा करजो आज;
के मारा भवनां बंधन छोड, आशा पूरी करजो आज. के०

अवर मिथ्यात्वी देव तज्या में,
प्रभु भक्तिना पाठ भण्यामें,
प्रगटो मुज अंतरनी ज्योत,
विनती ध्यान धरजो आज. –के मारा०

आप सेवानी प्रीत जो जागी,
भव उद्धारक विणा वाणी,
ज्ञान चक्षुनी खोड,
(सेवक कहे ज्ञान चक्षुनी खोट)

प्रभुजी पूरी करजो. आज. के मारा०

***

श्री जिन स्तवन

(थीयेट्री-राग)

कुंदकुंद प्रभु वंद्य त्रिकालजन,
ओर छांड भव द्वंद त्रिकालजन
देख सोनगढ सीमंधर (श्री मंदिर) जिन (बन)
समवसरण बीच कुंदकुंद मुनिगण
स्वाध्याय मंदिर मध्य भव्य नर वृंद जन – कुंद०

समयसार वच श्री गुरु मुख सुन,
कानजी महाराज स्वामी भाष ज्ञान प्रवचन;
बद्ध श्रुतज्ञानी निषतुष युक्ति आलंबन. – कुंद०

शुद्ध आत्मरस सतत ही स्वाद,
सविकार भाव त्याग, निर्विकार ध्यावत;
ज्ञान भाव मांय रच अनुभव लावत. –कुंद०

आत्म अनादि सिद्ध स्वरूपी,
अगम स्वरूप तद सुगम लखावत;
अनुभव ज्ञानमाय ज्ञानरस प्यावत. –कुंद०

नित्य निरंजन करम न अंजन,
बंध मुक्त भाव छेद स्वस्थ होत भव्यजन;
ध्यावो नंद निशिदन ग्रही फुंदका बच. –कुंद०

***

श्री जिन स्तवन

(मालीनी-राग)

जिन नमि अरिहंता, देवना देव संता,
कुमत तिमिर नाशे, कर्म भेदे अनंता;
दिव्यध्वनी गुणवाणी, देशना हितकारी,
भवि समकित पावे, बोध शुद्धात्म धारी. 1

त्रिजगत हितकारी, मोह मिथ्यामत हारी,
अखलित वर नाणं, केवलं दर्श धारी;
चरण विरज पूरे, आतमानंदकारी,
दुविध धरम दाखे, मोक्षमार्गाधिकारी. 2

समवसरण बिराजे, प्रातिहार्यादि शोभा,
परखद मलि बारे, सेवता थीर थोभा;
सवि सुरनर सेवे, आत्मता आत्म पावे,
पर ममत नशावे, शुद्धता आप भावे. 3

दुरित दूर नशावे, शुद्ध स्याद्वाद भावे,
त्रिकरण थिर सेवा, ध्यानमां जेह ध्यावे;
थिर शुक्ल सुध्याने, घाति चारे खपावे,
सेवक जिन सेवी, शाश्वतानंद पावे. 4

***

श्री सुमतिनाथ जिन स्तवन

(शिखरणी-राग)

स्वयं शांति सह्यं, सुमति जिनचंदा जगगुरु,
अखंडानंदी तुं, स्वगुणनिधि मांही सुखभरूं;
अनंता धर्मो सौ, विमल परिणामे, परिणमे,
अनुयायी वर्ते, परम गुणथी ते सद्दुं समे.

स्वकर्ता भोक्ता जे, स्वगुण रमनी निःपरिग्रही,
स्वव्यापी संतोषी, स्वगुण निधि त्राता प्रभु सही,
सदा ज्ञाता दृष्टा अमित सुख व्यक्ति शिवपति;
महा वीर्याबाधा अचल गुण पत्ता नित थिती.

अलेशी अस्पर्शी, अवचरण अगंधी रस विना;
अरागी अद्वेषी, प्रभु परम आधार भविना.

न जाण्यां तत्त्वोमे, शुद्धनय प्रमाणे मूढमते;
अनाचारे वर्ती भवभ्रमण कीधां दुरगते,
विभावे मोह्यो हुं, सुख गणी गणीने पर विषे;
सह्यां भारे दुःखो, करम उदये में पर वशे.

महत् पुण्ये आजे, सेवक श्री गुरु प्रेरक मळ्या,
मळे जेने सेव्या, गुण समकितादि निरमळा.

ग्रह्युं में संतोषे, भय हरण त्हारा शरणने;
अचिरे उद्धारो, भवजलनिधिथी प्रभु मने.

***

पंचकल्याणक-पाठ

पण विवि पंच परमगुरु गुरु जिनशासनो,
सकलसिद्धिदातार सु विघनविनाशनो.
सारद अरु गुरु गौतम सुमति प्रकाशनो,
मंगलकर चउ, संघहिं पापपणासणो.

पापहिं पणासन गुणहिं गुरुवा दोष अष्टादश-रहिंउ,
धरि ध्यान करम विनास केवलज्ञान अविचल जिन लहिउ,
प्रभु पंचकल्याणक विराजित सकल सुर नर ध्यावहीं,
त्रैलोक्यनाथ सुदेव जिनवर जगत मंगल गावहीं. 1

1-गर्भकल्याणक

जाके गरभकल्याणक, धनपति आईयो,
अवधिज्ञान, परवान, सुइंद्र पठाईयो;
रचि नव बारह जोजन, नयरि सुहावनी,
कनकरयणमणिमंडित. मंदिर अति बनी.

अति बनी पौरी पगारी परिखा, सुवन उपवन सोहये,
नर नारि सुन्दर चतुरभेख सु, देख जन मन मोहये;
तहं जनकगृह छह मास प्रथमहिं, रतन धारा बरसियो,
पुनि रुचिकवासिनि जननि सेवा, करहिं सबविधि हरषियो. 2

सुरकुंजरसम कुंजर, धवल धुरंधरो,
केहरि-केशर-शोभित, नख शिख सुंदरो;
कमला-कलश-न्हवन, दुई दाम सुहावनी,
रवि-शसि-मंडल मधुर, मीन-जुग पावनी.

पावनि कनक-घट-जुगम पूरन, कमलकलित सरोवरो,
कल्लोलमालाकुलितसागर, सिंहपीठ मनोहरो;
रमणीक अमर-विमान फणिपति-भुवन रवि-छवि छाजही,
रुचि रतन-राशि दिपंत दहन सु, तेजपुंज विराजही. 3

ये सखि सोलह सुपने, सूती शयनहीं
देखे माय मनोहर, पच्छिम रयनहीं.
ठठि प्रभात पिय पूछियो, अवधि प्रकाशियो,
त्रिभुवनपति सुत होसी, फल तिहँ भासियो.

भासियो फल तिहिं चिंत, दम्पति, परम आनन्दित भये,
छहमासपरि नवमास पुनि तहं, रैन दिन सुखसों गये;
गर्भावतार महंत महिमा, सुनत सब सुख पावहीं,
भणि रूपचन्द सुदेव जिनवर जगत मंगल गावहीं. 4

***

2-जन्म कल्याणक

मति श्रुत-अवधिविराजित, जिन जब जनमियो.
तिहुं लोक भयो क्षोभित, सुरगण भरमियो;
कल्पवासि-घर घंट, अनाहद बज्जिया,
ज्योतिष हरिनाद, सहज गल गज्जिया.

गज्जिया सहजहिं संख भावन, भुवन सबद सुहावने,
विंतर-निलयंपटु पटह बज्जहिं कहत महिमा क्यों बने;
कंपति सुरासन अवधिबल जिन-जनम निहचै जानियो,
धनराज तब गजराज मायामयी निरमय आनियो. 5

जोजन लाख गयंद, वदन सो निरमये,
वदन वदन वसुदंत, दंत सर संठए;
सर-सर सौ पनवीस, कमलिनी छाजहीं,
कमलिनी कमलिनी कमल, पचीस विराजहीं

राजहीं कमलिनी कमलड ठोतर, सो मनोहर दल बने,
दल-दलहिं अपछर नरहिं नवरस हाव भाव सुहावने;
मणि कनक किंकणि वर विचित्र, सु अमरमंडप सोहये,
घन घंट चंवर धुजा पताका, देखि त्रिभुवन मोहये. 6

तिहिं करि हरि चढि आयउ, सुर-परिवारियो,
पुरिहि प्रदच्छन दे त्रय, जिन जयकारियो;
गुप्तजाय-जिन-जननिहिं, सुखनिद्रा रची,
मायामयि शिशु राखि तो, जिन आन्यो सची.

आन्यो सची जिनरूप निरखत, नयन तृपति न ह्वजिये,
तब परम हरषित हृदय हरने, सहस लोचन पूजिये;
पुनि करि प्रणाम जु प्रथम इंद्र, उछंग धरि प्रभु लीनऊ,
इशान इंद्र सु चंद्र छवि सिर, छत्र प्रभु के दीनऊ.

सनतकुमार माहेंद्व, चमर दुई ढारहीं,
शेष शक्र जयकार, सबद उच्चारहीं;
उच्छव-सहित चतुरविध, सुर हरषित भये,
जोजन सहस निन्यानव, गगन उलंघि गये.

लंघिगये सुरगिरि जहां पांडुक-वन विचित्र विराजहीं,
पांडुक शिला तहं अर्द्वचंद्र समान, मणि-छवि छाजहीं;
जोजन पचास विशाल दुगुणायाम, वसु ऊंची गनी,
वर अष्ट-मंगल कनक कलसनि, सिंहपीठ सुहावनी.

रचि मणिमंडप शोभित, मध्य सिंहासनो,
थाप्यो पूरव मुख तहँ, प्रभु कमलासनो;
बाजहिं ताल मृदंग, वेणु वीणा घने,
दुंदुभि प्रमुख मधुर धुनि, अवरजु बाजने.

बाजने बाजहिं सची सब मिलि, धवल मंगल गावहीं,
पुनि करहिं नृत्यसुरांगना सब, देव कौतुक धावहीं;
भरी छीरसागर जल जु हाथहिं, हाथ सुरगिरि ल्यावहीं,
सौधर्म अरु इशान इन्द्र सु कलस ले प्रभु न्हावहीं. 9

वदन उदर अवगाह कलसगत जानिये,
एक चार वसु योजन मान प्रमानिये;
सहस-अठोतर कलसा, प्रभुके सिर ढरंई,
पुनि सिंगार प्रमुख, आचार सब करंई.

करि प्रगट प्रभु महिमा महोच्छव, आनि पुनि मातहिं दयो,
धनपतिहिं सेवा राखि सुरपति, आप सुरलोकहिं गयो;
जनमाभिषेक महंत महिमा, सुनत सब सुख पावहीं,
भणि रूपचन्द सुदेव जिनवर, जगत मंगल गावहीं. 10

***

3-तपकल्याणक

श्रमजलरहित शरीर, सदा सब मल-रहिठ,
छीर-वरन वर रुधिक, प्रथम आकृति लहिठ;
प्रथम सार संहनन, सरूप विराजहीं;
सहज सुगंध सुलच्छन, मंडित छाजहीं.

छाजहिं अतुलबल परम प्रिय हित, मधुर वचन सुहावने,
दस सहज अतिशय सुभग मूरति, बाललील कहावने;
आबाल काल त्रिलोकपति मनरुचित उचित जु नित नए,
अमरोपनीत पुनीत अनुपम, सकल भोग विभोगए. 11

भवतन भोग विरत्त कदाचित चित्तए,
धन जोबन पिय पुत्त कलत्त अनित्तए;
कोठ न सरन मरनदिन दुख चहुंगति भरयो;
सुख-दुःख एकहि भोगत, जिय विधिवसि परयो.

पर्यो विधिवसि आन चेतन, आन जड जु क्लेवरो,
तन अशुचि परतैं होय आस्रव, परिहरे तैं संवरो;
निरजरा तपबल होय, समकित, विन सदा त्रिभुवन भम्यो,
दुर्लभ विवेक विना न कबहूं, परम धरम विषै रम्यो. 12

ये प्रभु बारह पावन भावन भाईया,
लौकांतिक वर देव नियोगी आईया;
कुसुंमाजलि दे चरन कमल सिर नाईयो,
स्वयंबुद्ध प्रभु थुतिकर तिन समुझाईयो.

समुझाय प्रभुको निजपुर, पुनि महोच्छव हरि कियो,
रुचिरुचिर चित्र विचित्र शिबिका, कर सुनंदन-बन लियो;
तहं पंचमूठ्ठी लोंच कीनो, प्रथम सिद्धनी थुति करी,
मंडिय महाव्रत पंच दुद्धर सकल परिगह परिहरी. 13

मणिमय भाजन केश, परिठ्ठिय सुरपती,
छीरसमुद्र-जल खिप करि गयो अमरावती;
तप-संजम-बल प्रभुको, मनपरजय भयो
मौनसहित तप करत, काल कछु तहँ गयो;
गयो कछु तहं काल तपबल, रिद्धि वसुविधि सिद्धिया,
जसु धर्मध्यानबलेन खयगय, सप्त प्रकृति प्रसिद्धिया;
खिपि सातवें गुण जतनविन तहं, तीन प्रकृति जु बुधि बढिउ,
करि करण तीन प्रथम सुकलबल, क्षिपेकसेनी प्रभु चढिउ. 14

प्रकृति छतीस नवें गुणथान विनासिया,
दसवें सूक्ष्म लोभ प्रकृति तहँ नासिय;
सुकल-ध्यानपद दूजो पुनि प्रभु पूरियौ,
बारहवें गुण सोरह प्रकृति जु चुरियौ.

चूरियौ त्रेसठ प्रकृति इह विधि, घातिया-करमनितनी,
तप कियो ध्यानप्रयंत बारह-विधि त्रिलोक-सिरोमनी;
निःक्रमण-कल्याणक सुमहिमा, सुनत सब सुख पावहीं;
भणी रूपचन्द सु देव जिनवर, जगत मंगल गावहीं. 15

***

4-ज्ञानकल्याणक

तेरहवेंगुणथान सयोगि जिनेसुरो,
अनंतचतुष्टय मंडित, भयो परमेसुरो;
समवसरन तब धनपति, बहुविधि निरमयो,
आगमजुगति प्रमान, गगनतल परिठयो.

परिठयो चित्र विचित्र मणिमय, सभामंडल सोहये,
तिहिंमध्य बारह बने कोठे, बनक सुरनर मोहये;
मुनि कलपवासिनी अरजिका पुनि, ज्योत-भौम-भुवनतिया,
पुनि भवनव्यतंर नभग सुर नर पसुनि कोठे बैठिया. 16

मध्यप्रदेश तीन मणिपीठ तहां बने,
गंधकुटी सिंहासन कमल सुहावने;
तीन छत्र सिर सोहत त्रिभुवन मोहए,
अंतरीच्छ कमलासन प्रभुतन सोहए.

सोहये चौसठि चमर ढरत, अशोकतरुतल छाजए,
पुनि दिव्यधुनि प्रतिसबदजुत तहं, देव दुंदुभि बाजए;
सुरपुह्वपवृष्टि सुप्रभामंडल, कोटि रवि छवि छाजए,
इमि अष्ट अनुपम प्रातिहारज, वर विभूति विराजए. 17

दुईसे जोजनमान सुभिच्छ चहूं दिसी,
गगनगमन अरु प्राणी-वध नहिं अह-निसी;
निरुपसर्ग निराहार सदा जगदीशए,
आनन चार चहूंदिसि सोभित दीसए.

दिसय असेस विसेस विद्या, विभव वर इसुरपनो,
छायाविवर्जित सुद्ध फटिक, समान तन प्रभुको बनो;
नहिं नयन पलक पतन कदाचित, केस नख सम छाजहीं,
ये घातियाछयजनित अतिशय, दस विचित्र विराजहीं. 18

सकल अरथमय मागधि भाषा जानिये,
सकल जीवगत मैत्री भाव-बखानिये;
सकल रितुज फल-फूल-वनस्पति मन हरै,
दरपनसम मनि अवनि पवन गति अनुसरै.

अनुसरै परमानंद सबकौं, नारि नर जे सेवता,
जोजन प्रमान धरा सुमार्जहि, जहां मारुत देवता;
पुनि करहिं मेघकुमार गंधोदक सुवृष्टि सुहावनी,
पदकमलतर सुर खिपहिं कमल सु, धरणिशशिशोभा बनी. 19
अमल गगनतल अरु दिसि तहँ अनुहारहीं,
चतुरनिकाय देवगण जय जयकारहीं,
धर्मचक्र चलै आगैं, रवि जँह लाजहीं,
पुनि भंगारप्रमुख वसु मंगल राजही.

राजहीं चौदह चारु अतिशय, देव रचित सुहावने,
जिनराज केवलज्ञानमहिमा, अवर कहत कहा बने;
तब इंद्र आय कियो महोच्छव, सभा सोभा अति बनी,
धर्मोपदेस दियो तहां, उच्चरिय वानी जिन तनी. 20

छुधा तृषा अरु राग रोष असुहावने,
जनम जरा अरू मरण त्रिदोष भयावने;
रोग सोढा भय विस्मय अरु निद्रा घनी,
खेद स्वेद मद मोह अरति चिंता गनी.

गनिये अठारह दोष, तिंनकरी, रहित देव निरंजनो,
नव परम केवललब्धि मंडित, सिवरमनि-मनरंजनो;
श्रीज्ञानकल्याणक सुमहिमा, सुनत सब सुख पावहीं,
भणि रूपचन्द सुदेव जिनवर, जगत मंगल गावहीं. 21

***

5-निर्वाणककल्याणक

केवल दृष्टि चराचर देख्यो *जारिसो,
भव्यनि प्रति उपदेस्यो जिनवर **तारिसो;
भवभयभीत भविकजन सरणै आईया,
रत्नत्रयलच्छन सिवपंथ लगाईया.

---

* जारिसो जैसा. ** तारिसो-तैसा

लगाईया पंथ जु भव्य पुनि प्रभु. तृतिय सुकल जु पूरियो,
तजि तेरवां गुणथान जोग, अजोगपथ पग धारियो;
पुनि चौदहें, चौथे सुकलबल, बहत्तर तेरह हती,
इमि घाति वसुविध कर्म पहुंच्यो, समयमें पंचमगती. 22

लोक सिखर तनुवात-वलयमहँ संठियो,
धर्म द्रव्य विन गमन न जिहि आगै किया;
मयनरहित मूषोदर अंबर जारिसो,
किमपि हीन निज-तनुतैं भयो प्रभु तारिसो.

तारिसो पर्जय नित्य अविचल, अर्थ पर्जय छनछयी,
निश्चयनयेन अनंतगुण, विवहार नय वसु गुणमयी;
वस्तुस्वभाव विभावविरहित, सुद्ध परिणति परिणयो,
चिद्रूप परमानंदमंदिर, सिद्ध परमातम भयो. 23

तनुपरमाणु दामिनिवत, सब खिरगए,
रहे शेष नखकेश रूप, जे परिणए;
तब हरिप्रमुख चतुरविधि, सुरगण शुभसच्यो,
मायामयि नख केशरहित, जिनतनुरच्यो.

रचि अगर-चंदन प्रमुख परिमल, द्रव्य जिन जयकारियो,
पदपतित अगनिकुमार मुकुटानल, सुविध संस्कारियो;
निर्वाण कल्याणक सु महिमा, सुनत सब सुख पावहीं,
भणि रूपचन्द सुदेव जिनवर, जगत मंगल गावहीं. 24

मैं मतिहीन भगतिवस, भावन भाईया,
मंगल गीतप्रबंध, सु जिनगुण गाईया;
जोनर सुनहि, बखानहिं, सुरधरी गावहीं,
मनवांछित फल सो नर, निहचै पावहीं.

पावहीं आठौं सिद्धि नव निधि, मन प्रतीत जो लावहीं,
भ्रम भाव छूटै सकल मनके, निज स्वरूप लखावहीं;
पुनि हरकिं पातक हरहिं विघन, सु होहि मंगल नित नये,
भणि रूपचन्द त्रिलोकपति, जिनदेव चउसंघहि जये. 25

***

श्री वीर जिन स्तवन

(राग-अहा केवुं भाग्य जाग्युं)

अहो मारां नसिब जागे, वीरनां वचनो मळ्यां;
शक्र सेवित वचन रागे, कारज मुज सघळां फळ्यां. अहो. 1

वर्धमान तुज मूरति प्रेमे, दुरित मुज दूरे गयां;
तीर्थेश्वर तुज दर्श देखी, कार्य मुज निकट थयां. अहो. 2

अजरामर तुज रूपडुं निरखी, मनडुं मुज हर्षित थयुं;
शिवंकर तुज मुखडुं देखी, चित्तडुं मुज विकसित थयुं. अहो. 3

अविकारी तुज नयन पेखी, नयन मुज उल्लसित थयां;
ध्यानेश्वरी तुज करने नीरखी, मुजकर अति लज्जित भयां. अहो. 4

जगदीश्वर तुज चरण निरखी, मुज हृदय चरणे गयुं;
करूणासिन्धु तुज कृपाथी, मुज जीवन सफल थयुं. अहो. 5

कृपानिधि तुज मीठी नजरे, भव्य जीव मुक्ते गया;
योगीनाथ तुज दर्शन योगे, दुःखिया पण सुखिया थया. अहो. 6
तीर्थपति तुज वंदन ध्याने, देडको पण देव थयो;
दयानिधि तुज शरण ग्रहीने, अभिमानी पण नमी गयो. अहो. 7

एम महिमां तुज सांभळीने, हरखे जे तुजने यजे;
सेवक तुमारा चरण सेवीने, तेही अमृत पदने भजे. अहो. 8

***

श्री नेमनाथ जिन स्तवन

(राग-जावो जावो अय मेरे साधु रहो गुरू के संग)

आवो आवो हे नेमस्वामी, म्हारा अंतरमां,
बालपणे थयां ब्रह्मचारी, तारक जगना नाथ;
गिरनार गिरिमां म्हाली प्रभुजी, कीधुं आतम काज. आवो. 1

सहेसावनमां संयम लईने, पाम्या केवळज्ञान;
चउमुखे देई धर्म देशना, कराव्युं आतम भान. आवो. 2

पशुंडा ब्हाने सान करीने, तारी राजुल नार;
संयम रसनो स्वाद चखाडी, आप्युं पद अणाहार. आवो. 3

नाथ निरंजन भव भय भंजन, कर्यो करमनो नाश;
त्रिभुवन स्वामी शिव वधु गामी, म्हारे तुमारी आश. आवो. 4

माता शिवादेवी जाया, जय जगमां जिनराज;
म्हेर करी, जिनजी सेवकने, आपो शिवपुर राज. आवो. 5

***

श्री जिन स्तवन

(राग-पूजारी मोरे मंदिरमे आवो)

जिणंदा मेरा अंतरमे आयो,
तेरे आननकी भद्र छायामें, अंतर मेरो मोहायो, जिणंदा. 1

तेरे जैसे में नाथको पामी, आनंद मंगल गायो;
मोहको वारो आतम तारो, तुंहि मोरो हितदायो. जिणंदा. 2

जिनवर जय जयकारी प्रभुजी, अमर वधु तुं गवायो;
अंतरजामी सुखकर स्वामी, तुं मोरे नाथ मनायो. जिणंदा. 3

तुम दर्शामृत पान करीने, अंतर मेल मिटायो;
भवजळ झाझ प्रभु पामीने, भवोदधि पार पमायो. जिणंदा. 4

***

श्री जिन स्तवन

(राग-मोहे प्रेमके झुले झुलादो कोई)

मेरा जीवका नाथ जिणंदा पाये, मेरा प्राणके नाथ जिणंदा पाये.
तेरे जैसा रे अवर न देखा, तुंहि अद्भुत इहां सुरिंदा पाये. मेरा. 1

क्षायक ज्ञानकी ज्योत धरत है, तुंहि एक अव्वल दिणंदा पाये मे. 2

तोडी करमको गुण अनंते, प्रभु धारक तुंहि मुणिंदा पाये. मेरा. 3

तेरे शासन रस अमृतधारा, पान करे सो जिणंदा थाये. मेरा. 4

***

श्री सीमंधर जिन स्तवन

(नदी किनारे बैठके आवो-ए राग)

नमी नमीने जिनवर ध्यावो, मानव भव फल पावो;
मन वच काया एक करीने, पल पल दिल जिन लावो. नमी. 1

भक्ति*-मयुरी रंगे संगे, कर्म** भुजंग भगावो;
कल्पतरू सम जिनवर सेवी, मनवंछित खुब पावो. नमी. 2

---

* भक्तिरूप ढेल-मोरली. 2. कर्मरूपी सर्प

चंद्र-चकोर दिवाकर-चकवा, चातक-मेघ सम ध्यावो;
चंदन शीतळ परे एकमेक थईने, आतम ज्योति मिलावो. नमी. 3

जिन-गुण-नंदन-वनमां विचरी, चित्त-समाधि जगावो;
केवल-कमला विमला1 कलिता, मुक्ति लीला सुख पावो. नमी. 4

---

1 निर्मळ केवळ ज्ञानरूपी लक्ष्मीथी सहित.

सत्य मात तात श्रेयांस जस, जगत तात वधावो;
श्री सद्गुरु चरणोपासक, भक्त कहे गुण गावो. नमी. 5

**

श्री सीमंधर जिन स्तवन

मैं विदेहीप्रभु मुखचंद पुनमचंद ध्या.....वुं.....रे,
मैं जिनका संगी बनके दिल उलसा.....वुं.....रे.
मैं राग द्वेष छटकावुं, नहिं मोह पाशमें आवुं,
मैं दिलवर जिन दिल लावुं, तुम गुण गा.....वुं.....रे मैं विदेही. 1

मैं वीतरागी कंद जिणंदपद ध्या.....वुं.....रे.
मैं चित्तचकोर के चंद जिणंदचंद गा.....वुं.....रे.

मैं 2 आलपाल विलसावुं, नहि भव 3 भाल मैं पावुं.
मैं पलपल मंगल पावुं, तुम गुण गा.....वुं.....रे. मैं विदेही. 2

---

2. सेवाभक्ति. 3. वृक्षो तथा पाणी विनानुं शून्य जंगल

मैं ताल ताल गुन गावुं, मैं मन कजको विकसावुं,
मैं श्री जिनवर के सेवक बनके गा....वुं.....रे
मैं गुरुवर सेवक बनके दिल उलसा.....वुं.....के
मैं व्हाल व्हाल कर निशदिन शीश नमा....वुं.....रे
मैं न्याल न्याल कर जिनवर तुम गुण गा.....वुं....रे. मैं. विदेही. 3

***

श्री जिन स्तवन

(राग-रखीया बंधावो भैया)

जिनजीको ध्यावो भैया, गुण गण गावो रे
मूरति प्रभुकी भाली सुरत है निराली,
तारे तुं मारी नैया, जय जग दीवो रे. जिनजी0

पूजनकी थाली, लगी हय लय भारी,
तारे तुं मोरी नैया, जय जग दीवो रे. जिनजी0

चउगतिने दारी, आतम गुणकारी,
कर्मोनो थावो खाईयां, जय जग दीवो रे. जिनजी0

गुणोंकी श्रेणी आली, देती है दुःख टाली,
सेवो सदा ए सैयां जय जग दीवो रे. जिनजी0

विदेही जिणंदासे, प्रीत लगी है मोहे,
जिणंद सेवक गुण गईयां जय जग दीवो रे. जिनजी0

***

जय आदि जिनंद सुचंद नमो, जय इंद्र नरिंद्र सुवंद्य नमो;
जय मोह महा अरिफंद नमो, जय आनंद कंद जिनंद नमो. 1

युग आदि जिनं विभु देव नमो, जगजीवन के प्रभु देव नमो;
जय लोक हितंकर नाथ नमो, युगमें अभयंकर नाथ नमो. 2

जय आदि जिनेश महेश नमो, जय वंदित इश सुरेश नमो;
सुकृषि मसि आदि प्रकाश नमो, शिवमारग के परकाश नमो. 3

जयलोक अलोक विकास नमो, चिद् आतम ज्योति विलास नमो;
शत पांच धनुष विशाल नमो, कनक महाद्युति भाल नमो. 4

भवसागर तारण सेत नमो, दुःख द्वंद निवारण हेत नमो;
ज्य सात तत्त्व परकाश नमो, जिनेश महेश महेश नमो. 5

समोसृति संपत्ति प्राप्त नमो, निरदोष जिनेश सु आप्त नमो;
जय श्रीधर श्रीकर देव नमो, जय श्रीवर श्रीभर सेव नमो. 6

जय मुक्ति रमापति पाद नमो, जय भव दुःख नाशक पाद नमो;
जय दिन दयाल कृपाल नमो, जय नाथ अनाथा नृपाल नमो. 7

जग जीवनको उच्चार नमो, कृत कृत्य प्रभु जगतार नमो;
जय केवल भान अमान नमो, जग पूज्य शिरोमन जात नमो. 8

भव संकट भंजन पाय नमो, नित मंगल वृदं वधाय नमो;
भगवंत सुसंत अनंत नमो, जयवंत महंत नमंत नमो. 9

***

श्री शांतिनाथ जिन स्तवन

(इन्द्रवज्र छंद) (कल्याणकंदं पढमं जिणंद-राग)

श्री शांति तीर्थेश सुशांति धाम, सर्वे प्रदेशे शुचि आत्मराम;
सर्वे स्वधर्मो प्रगट्या महंत, दग ज्ञान चारित्र सुवीर्यवंत. 1

अज्ञान रात्री हणवा दिणंद, क्रोधादि तापो हरवा सुचंद्र;
संसारथी तारण प्रौढ पोत, सिद्धि निधि भासन पूर्ण ज्योत. 2

स्याद्वाद वाक्ये सुनये प्रसिद्ध, जीवादी तत्त्वो उपदेश कीध;
द्विधा प्रकारामय धर्म त्हारो, साधुजनोने शिव आपनारो. 3

त्हारी सुआणा हृदये ठरे जो, मोहादि शत्रु सहजे मरे तो;
संतोष ले सूख अनंत आप, उपकार ए सद्गुरुनो अमाप. 4

***

श्री गुरु गुण वंदन

(शार्दुल विक्रीडित छंद)

बोधाधार सवे भविक जनने, शुद्धोपदेशी सदा;
शांतिदायक ए श्री कहानगुरुने, श्रीमंत त्राता मुदा. 1

वंदु हुं विनये सदा परमथी, ध्यातो निजानंदने;
जाग्यो छुं सुणि वाणि तारी विमली साचा खरा उद्यमे. 2

वाणी जो न लही तुमारी भवमां, दुःखे भरी में सह्यो;
पाम्यो आज मनुजनो सफलतो, कीजे प्रभुए कह्यो. 3

वाणी आज लही प्रभुनी अचली, सिद्धि लहीशुं खरी;
साधीशुं करि मोह दूर सुमते, संतोष हैडे ठरी. 4

***

श्री विमलनाथ जिन स्तवन

(वसंततिलका-राग)

कल्याणकारी विमलेश अशेष नाणी, तिक्षणोपयोग अचले करी कर्म हाणी;
दानादि लब्धि निज पूर्ण अखंड भोगी, वर्णादि पुद्गल विभावथी निःप्रयोगी
शोभित आश्चर्य अतिशय युक्त देव, चक्रेश देव गणनाथ नमे ससेव;
भामंडलादि अनुंप वसु प्रातिहार्य, एवा जिनेश दरशे प्रगटे सुकार्य.
मिथ्यात पंच तम हर्ण अनूप सूर, संसार मोह देव मेटन मेघपूर
निक्षेप पक्ष नय भंग प्रमाण युक्त, तत्त्वोपदेश दईने भवि कीध मुक्त

***

मल्लीनाथ जिन स्तवन

(शिखरिणी छंद)

नमो मल्लिनाथं, करम मल व्याधि दुर करो
अनंता ज्ञाने तो, पूरण मुज आत्मा सुख भरो;
अनंतानंदी तुं, सकल भवि तारू भयहरू,
तमारी आणामां, मन वचन काया थिर करूं.

अनंता जीवो सौ, सगुण निधि भूली भव भमे,
अचीरे उद्धारो, प्रभुजी विण बीजो नवि गमे;
तर्या तारो तारो, सकल मुज व्यक्ति शिव करो,
पूज्या देवो वृंदे, अचल तुज ध्याने रस भरो.

बहुने तार्या तें, मुज गरिब जाणी दुःख हरो,
सदा शरणे राखो, सहुने समभावे सुखी करो;
लह्यो आश्रय मोटो, सकल भय भाग्यो दरशतें,
भवाब्धि भीमेथी, तुम सम न तारू अवर छे;
लह्यो में स्याद्वादं, कुमत तुज तापो नवि सहे,
पूजुं हुं आनंदे, मृगमद सुवासे महमहे.

***

श्री शांतिजिन स्तवन

(वसंततिलका छंद)

हुं ज्ञानवंत अमलान शुद्धात्म भोगी,
ज्ञाता सदा अचल एक प्रमोद योगी;
राखी स्वभाव परभावथी निःप्रयोगी,
ना काम छे पर पदे नहि अन्य योगी,
ना रागद्वेष न न मान करे कदापि,
ना संग रंग न न पुद्गल बुद्धि थापी;
शांति जिनेश परमात्म स्वभाव लीना,
शांति दिये भविकने शिवरंग भीना;
दीनो सुबोध सवि मोह विकार नाशे,
आत्म वरे विमल ज्योति महा प्रकाशे,
तेने नमो परमहेतु लखी जिणंदा,
देवाधिदेव प्रभु सेवित इंद्र चंदा;
सेवुं सदा चरण शांति जिणंदा एवा,
साची फले परम पूज्य रूडी सु सेवा;
स्वामी समो अवर कोई पिता न दीठो,
में तो लह्यो सेवक मन निज हेतु मीठो.

***

श्री सिद्ध स्तवन

(राग-मालिनी)

बहुं विनयथी वंदु, सिद्धने सिद्धिदाता,
सुख अमित अनंते, शांतिमां छेक राता;
शिव अवय अयोगी, लब्धि पंचे प्रकाशी,
गई सकल उपाधि, जे अनंगी अनाशी.

परम शरम सिद्धि, ज्ञान आनंद लीना,
विमल परम भोगे, शाश्वता सुख पीना;
पूरण पद प्रजाया, अष्ट गणात्म राया,
निज सहज स्वतंता, मुक्तिधामे सुहाया.

अखय अचल देवा, लोक अंते बिराजे,
अखिल धरम व्यक्ति, दीपता राज छाजे;
करम भरम नाशे, सिद्धने जेह ध्यावे,
सवि दुरित खपावे, शुद्ध आनंद पावे.

सहज थिर समाधी, शुद्ध ज्योति प्रकाशे,
अठ करम क्षयेथी, पूर्णता पूर्ण भासे;
धरम शुकल ध्याने, ध्यावतो ध्येय धारी,
सेवक सुख पामे, सिद्धता शांतिकारी.

***

पंचबाल ब्रह्मचारी तीर्थंकर स्तुति

जय जय पंचकुमार नमस्ते, अविनाशी अविकार नमस्ते,
जय त्रिभुवन शिरताज नमस्ते, तारण तरण जहाज नमस्ते. 1

वासूपूज्य सुखकंद नमस्ते, सद्-चित्त नित्यानंद नमस्ते,
बाल जती जगराय नमस्ते, स्वास्थरूप बलदाय नमस्ते. 2

विश्व दिवाकर इश नमस्ते, मोह तिमिर रजनीश नमस्ते,
रत्नत्रय धर वीर नमस्ते, दसधा धर्म कुटीर नमस्ते. 3

मल्हनाथ वर मल्ल नमस्ते, वीतराग निशल्ल नमस्ते;
समर सूर संहार नमस्ते, कीर्ति सुयश दातार नमस्ते. 4

रागद्वेष परिहार नमस्ते, पतित अधम उद्धार नमस्ते;
ध्येय ज्ञेय भगवंत नमस्ते, जय शिवकामिनि कंत नमस्ते. 5

हरिहर नेमकुमार नमस्ते, पुत्र पौत्र सुखकार नमस्ते;
राजमती कर त्याग नमस्ते, व्याह समय वैराग्य नमस्ते. 6

भुक्त मुक्त दातार नमस्ते, निराकार साकार नमस्ते;
अशरण शरण सहाय नमस्ते, सकल जीव सुखदाय नमस्ते. 7

पार्श्व अनाथना नाथ नमस्ते, दर्शायक शिवपाथ नमस्ते;
शिववर बाल जतीश नमस्ते, आत्म संपत दानीश नमस्ते. 8

ब्रह्मचारी ब्रह्मदेव नमस्ते, मदन चूर स्वयमेव नमस्ते;
शुद्ध बुद्ध चिद्रूप नमस्ते, ध्यान धुरा वृषस्तूप नमस्ते. 9

महावीर अति वीर नमस्ते, वर्धमान गुण धीर नमस्ते;
शांति ज्ञान तप हेत नमस्ते, भव रत्नाकर सेत नमस्ते. 10

वीर अनंत जीतार नमस्ते, मुक्त वधु भवतार नमस्ते;
सहित चतुष्टयवंत नमस्ते, जय जय जय जयवंत नमस्ते. 11

***

श्री सिद्ध स्तुति

(त्रोटक)

सुख सम्यकदर्शनज्ञान लहा, अगुरुलघु सूक्षम वीर्य महा;
अवगाह अबाध अघायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो. 1

असुरेंद्र सुरेन्द्र, नरेन्द्र जजे, भुचरेन्द्र खगेन्द्र गणेन्द्र भजे;
जर-जामन-मर्ण मिटायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो. 2

अमलं अचलं अकलं अकुलं, अछलं असलं अरल अतुल;
अरलं सरलं शिवनायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो. 3

अजरं अमरं अघरं सुधरं, अडरं अहरं अमरं अधरं;
अपरं असरं सबलायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो. 4

वृषवृंद अमंद न निंद लहे, निरदंद अफंद सुछंद रहै;
नित आनंदवृंद बिधायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो. 5

भगवंत सुसंत अनंतगुणी, जयवंत महंत नमंत मुनी;
जगजंतुतणें अघघायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो. 6

अकलंक अटंक शुभंकर हो, निरडंक निशंक शिवंकर हो;
अभयंकर शंकर क्षायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो. 7

अतरंग अरंग असंग सदा, भवभंग अभंद उतंग सदा;
सरवंग अनंगनसायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो. 8

ब्रह्ममंड जु मंडलमंडन हो, तिहुं दंड प्रचंड विहंडन हो;
चिदपिंड अखंड अकायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो. 9

निरभोग सुभोग वियोग हरे, निरजोग अरोग अशोग धरेd
भ्रमभंजन तीक्षण सायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो. 10

***

जय लक्ष्य अलक्ष्य सुलक्षक हो, जय दक्षक पक्षक रक्षक हो;
पण अक्ष प्रतक्ष खपायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो. 1

अप्रमाद अनाद सुस्वादरता, उनमाद विवाद विषादहता;
समता रमता अकषायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो. 2

निरभेद अखेद अछेद सही, निरवेद निवेदन वेद नहि;
सब लोक अलोकके ज्ञायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो. 3

अमलीन अदीन अरीन हने, जिनलीन अधीन अछीन बने;
जमको घनघात बचायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो. 4

न अहार निहार विहार कबै, अविकार अपार उदार सबै;
जगजीवन के मनभायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो. 5

असमंध अधंक अरंध भये, निरबंध अखंद अगंध ठये;
अमनं अतनं निरवायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो. 6

निरवर्ण अकर्ण उधर्ण बली, दुःखहर्ण अशर्ण सुशर्ण भली;
बलि मोहकि फोजभगायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो. 7

अविरूद्ध अक्रुद्ध अजुद्ध प्रभु अतिशुद्ध प्रभुद्ध समृद्ध विभू;
परमातम पूरन पायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो. 8

विररूप चिद्रूपस्वरूप द्युती, जसफूप अनुपमभूप भुती;
कृतकृत्य जगत्रयनायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो. 9

सब इष्ट अभीष्ट विशिष्ट हितू, उतकष्टि वरिष्ट गरिष्ट मीतू;
शिव तिष्टत सर्व सहायक हो, सब सिद्ध नमो सुखदायक हो. 10

जय श्रीधर श्रीधर श्रीवर हो, जय श्रीकर श्रीभर श्रीझर हो;
जय रिद्ध् सुसिद्धि बढायक हो, सब सिद्धि नमो सुखदायक हो. 11

***

श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र

(भुजंगी प्रयात, छंद)

नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेंद्रं अधीसं, शतेन्द्रं सु पूजे भये नाय शीशं;
मुनींद्रं गणेंन्द्रं नमे जोड हाथं, नमो देवदेवं सदा पार्श्वनाथं. 1

गजेन्द्रं मृगेन्द्रं गहो तू छुडावे, महा आग ते नागते तूं बचावे;
महावीर ते युद्धमें तूं जीतावे, महा रोग ते बंध ते तूं छुडावे. 2

दुःखी दुःख हर्ता सुखी सुखी कर्ता, सदा सेवकोंको महानंद भर्ता;
महा संकटो से निकाले विधाता, सबे संपदा सर्वको देही दाता. 3

महा चोर को व्रजको भय निवारे, महा पौन के पुंज ते तुं उबारे;
महा क्रोधकी अग्नि को मेघ धारा, महा लोभ शैलेश को वज्र भारा. 4

महा मोह अंधेर को ज्ञानभानु, महा कर्म कांतार को दो प्रधानं;
कीये नाग नागिन अधोलोक स्वामी, हरो मान तु दैत्य का हो अकामी. 5

तुंही कल्पवृक्षं तुंहीं कामधेनुं, तुंहीं दिव्य चिंतामणी नाग एनं;
पशु नर्क के दुःखसे तुं छुडावे, महा स्वर्ग में मुक्ति में तुं वसावे. 6

करे लोहको हेम पाषाण नामी, रटे नाम से क्यों न हो मोक्षगामी;
करे सेव ताकी करे देव सेवा, सुने वैन सोही लहे ज्ञान मेवा. 7

जपे जाप ताको नहि पाप लागे, धरे ध्यान ताके सबे दोष भागे;
विना तोही जाने धरे भव घनेरे, तुम्हारी कृपा ते सरे काज मेरे. 8

***

श्री प्रभु स्तुति

(चोपाई)

मैं तुम चरण कमल गुणगाय, बहुविधि भक्ति करूं मन लाय;
जनम जनम प्रभु पाउं तोहि, यह सेवाफल दीजे मोही. 1

कृपा तिहारी ऐसी होय; जामन मरन मिटावो मोय;
वार वार मैं विनति करुं तुम सेयें भवसागर तरुं. 2

नाम लेत सब दुःख मिट जाय, तुम दर्शन देख्या प्रभु आय;
तुम हो प्रभु देवनके देव, मैं तो करूं चरण तव सेव. 3

मैं आयो पूजनके काज, मेरो जन्म सफल भयो आज;
जो मुज सेवककी अरदास, सो सब रही ज्ञान में भास. 4

याते नहिं कछु कहनी परे, तुमही ते सब कारज सरे;
तुमरे गुणां को स्वामी अंत न पार, तुम विन कोन लगावे पार. 5
तार तार विल मत कर देव, एहि विरद सुन तारन एव;
पूजा करके नवाउं निज शीश, मुज अपराध क्षमहुं जगदीस. 6

***

श्री महावीर स्तुति

(त्रोटक छंद)

ज्यं केवल भानु कलासदनं, भविकोक विकाशन कंदवनं;
जगजीत महारिपु मोहहरं, रजज्ञान द्रगावर चूरकरं. 1

गर्भादिक मंगल मंडित हो, दुःख दारिदको नित खंडित हो;
जगमांही तुम्हीं सत् पंडित हो, तुमही भवभाव विहंडित हो. 2

हरिवंशसरोजनको रवि हो, बलवंत महंत तुम्हीं कवि हो;
लही केवलधर्म प्रकाश कियो, अबलो सोई मारग राजतियो. 3

पुनी आप तने गुनमांही सही, सुर मग्न रहे जीतने सबही;
तिनकी वनिता गुन गावत है, लय माननिसौं मनभावत है. 4

पुनि नाचत रंग उमंग भरी, तुव भक्तिविषे पग येम धरी;
झननं झननं झननं झननं, सुरलेत तहां तननं तननं. 5

कई नारी सुबीन बजावती है, तुमरो जस उज्वल गांवति है;
करताल विषे करताल धरे, सुरताल विशाल जु नाद धरे. 6

इन आदि अनेक उछाह भरी, सुरभक्ति करे प्रभुजी तुमरी;
तुमही जगजीवनके पितु हो, तुमही विन कारनतें हितु हो. 7

तुमही सब विघ्न विनाशन हो, तुमही निज आनंद भासन हो;
तुमही चितचिंतित दायक हो, जगमांही तुम्ही सब लायक हो. 8

तुमरे पन मंगलमांहि सही, जिय उत्तम पुन्न लीयो सबही;
हमको तुमरी सरनागत हो, तुमरे गुनमें मन पागत है. 9

प्रभु मो हीय आप सदा बसिये, तबलों वसुकर्म नहिं नसिये;
तबलों तुम ध्यान हिये बरतो, तबलों श्रुतचिंतन चित्त रतौ. 10

तबलों व्रत चारित चाहतु हो, तबलों शुभभाव सुगाहतु हो;
तबलों सत्संगतिनित्त रहो, तबलों मम संजम चित्तगहो. 11

जबलों नहिं नाश करों अरिको, शिवनारी वरो समता धरीको;
यह द्यो तबलों हमको जिनजी, हमचाहतु है इंतनी सुनजी. 12.

***

श्री अरनाथ जिन स्तुति

(त्रोटक छंद)

जय श्रीधर श्रीकर श्रीपतिजी, जय श्रीवर श्रीभर श्रीमतिजी,
भवभीम भवोदधि तारन है अरनाथ नमों सुखकारन है.

गरभादिक मंगल सार धरे, जग जीवनिके दुःखदंद हरे,
कुरूवंश शिखामनि तारन है, अरनाथ नमों सुखकारन है.

करि राज छखंड विभूति मई, तप धारत केवलबोध ठई,
गण तीस जहां भ्रम वारन है, अरनाथ नमों सुखकारन है.

भवि जीवनिको उपदेश दियो, शिवहेत सर्वजन धारि लियो,
जगके सब संकट टारन है, अरनाथ नमों सुखकारन है.

फिर आप अघाति विनाश सबे, शिवधाम विषे थित कीन तबे,
कृतकृत्य प्रभु जगतारन है, अरनाथ नमों सुखकारन हैं.

अब दीनदयाल दया धरिये, मम कर्म कलंक सबे हरिये,
तुमरे गुनको कछु पार न है, अरनाथ नमो सुखकारन है.

***

श्री गुरुराज स्तुति

श्री गुरुराज तेरा चरणो में शिर नमावुं,
में भक्ति भेट आपनी बलिदान में चडावुं;
ब्रह्मांडमांही भानु तेरी आरती उतारे,
श्री गुरुदेव तेरो महिमा दिगन्ते गाजे;
कुंदकुंदे कुंदन रोप्यां अमृते अमृत रेड्यां,
कान प्रभुए घाट घडिया अचिंत्य काज सरिया;
कुंदकुंद मुखारविंदते प्रगटी ए दिव्यवाणी,
गुरूजी घट व्यापी परम प्रकाश पामी.

मंगळतरु धरनारी भवजळ तारनारी,
बंध विदारणहारी मुक्तनी ए निसरणी;
श्री समयसार वाणी त्रिजग हितकारी,
महिमा करुं शी तेरी अल्प मति छे मेरी;

हे सद्गुरु देवा सुरराज सारे सेवा,
मोक्षमार्ग एवा समयसार आप्या मेवा;
हे जय जगत त्राता हे जय जगत भ्राता,
हे सुखशांति दाता सेवक दान दाता;

प्रभु ! जय मंगळकारी छो महा उपकारी,
पूर्ण स्वरूपनो हुं प्यासी आश पूरजो हे स्वामी;
परभावना विसामे शरणे आव्यो हुं तारे;
व्यवहार विभक्ते स्वभावमां एकत्वे;

तेरे ही काम आवुं तेरा ही मंत्र गाठं,
मन ओर देह तेरा बलिदान में चडाठं;
सेवा में तेरी सारी तनको में भूल जाठं,
में भक्ति भेट आपनी बलिदान में चडाठं.

***

श्री सद्गुरुवाणी स्तुति

ज्ञान सिंधु गुरु वदनथी, वचनामृत वृष्टि थई,
शांति शांति परम शांति सर्वदा फेली रही;
विगत दोष सुगुण कोषं, छे शिवंकर ते सही,
दुष्ट थोक कर्म रोग, पीडा सौ दूरे गई. 1

भव्य जीवो करे पान, चित्तमां मुदित थई,
कषायोनी दुष्ट आग स्पर्शता बूझी गई;
विभावोनी जे पिपासा, शमीने शांति थई,
श्रुतधारी दृष्ट ज्ञातृ, दोषातीत जे सही. 2

जो स्यादवादे नाठा कुवादी झांखा थई,
ते श्री कहान गुरुजीने, सुरेश स्तवे आनंद थई;
तेहनुं जे दर्श पामे, तेह धन्य ! धन्य ! छे सही,
संतोषथी ते अल्पकाले, पामशे सुख शिवमयी. 3

***

श्री पार्श्वजिन स्तवन

(राग-भारी बेडाने हुं तो पूजुं)

मुक्ति लेवाने प्रभु में सेव्या रे लाल,
प्रगट प्रभावी प्रभु पार्श्व जो, अमर हो जाव सिद्धि कांठडे रे लाल
पारसरस सम पामिया रे लाल,
करो पारस निजगुण मांय रे--अमर हो जाव.

पंचमकाळे प्रभु गाजता रे लाल,
भवि सेवे सविसुख थाय रे,--अमर हो. जाव

साधक शिर प्रभु शोभता रे लाल,
भववल्ली अमारी छेदाय रे.—अमर हो जाव.

***

श्री जिन स्तवन

भवि भावे जिनालय आवो, प्रभु मुख जोवाने;
मने लाग्यो छे प्रेम प्रभु तारो, परम सुख पावाने. –भावि

(साखी)

भव वनमां भूलो पड्यो, कांई न दीठुं सुख,
भूख्यो तरस्यो आवियो, हवे जाशे ते मारां दुःख – परम. 1

ज्ञान ज्युं शारद चांदलो, दीठे परम कल्याण,
प्रभु तुज धर्मना राजमां, न रंजे मोह नृप आण. – परम. 2

आजदिन मारो सवि फळ्यो, जाग्या पुण्य अंकुर;
भूख्या ज्युं भवि प्राणीने, मीले महा धृतपूर. – परम. 3

आतम अनुपम दीपतो, केवळ सुख अनूप;
त्रिकरण जोगे ध्यावतां, जाए पूरवना फंद. – परम. 4

साहिब मारा आपजो, सेवक मुक्ति निवास;
प्रताप तारो शोभशे, इम जपे भगत तुज पास – परम. 5

***

निर्वाणकांड स्तुति

चोपाई—राग

अष्टापद आदीश्वर स्वामी वासुपूज्य चंपापुरि नामि;
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, वन्दो भाव भगति उर धार.
चरम तीर्थंकर चरम शरीर, पावापुरि स्वामी महावीर;
शिखर समेद जिनेश्वर वीश, भाव सहित वन्दो निशदीस,

वरदत्तराय रु इन्द्र मुनिंद, सायरदत्त आदि गुणवृंद;
नगर तारवर मुनि *ठठकोडी, वन्दो भाव सहित कर जोडी.
श्री गिरनार शिखर विख्यात, कोडी बहत्तर अरू सौ सात;
शंभु प्रद्यम्न कुमर द्वै भाय, अनिरुध आदि नमुं तसु पाय.

---

* साडात्रण करोड.

रामचंद्र के सुत द्वै वीर, लाड नरिंद आदि गुणधीर;
पांच कोडि मुनि मुक्ति मझार, पावागिरि वन्दो निरधार.
पांडव तीन द्रविड राजान, आठ कोडि मुनि मुक्ति पयान;
श्री शत्रुंजय गिरिके शीश, भाव सहित वन्दो निशदीस.

जे बलभद्र मुक्तिमें गये, आठ कोडि मुनि ओर हि भये,
श्री गजपंथ शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमुं तिहुंकाल.
राम हनू सुग्रीव सुडील, गवगवाख्य नील महानील;
कोडि निन्याणवे मुक्तिपयान, तुंगीगिरि वन्दो धरी ध्यान.

समवसरण श्रीपार्श्व जिनंद, रेसंदीगिरि नयनानन्द;
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वन्दो नित धरम जिहाज.
तीन लोकके तीरथ जहां, नित प्रति वंदन कीजे तहां;
मन वच काय सहित सिरनाय, वंदन करहि भविक गुणगाय.

संवत सतरहसौ इकताल, आश्विन सुदी दशमी सुविशला;
'भैया' वंदन करहि त्रिकाल, जय निर्वाणकांड गुणमाल.

***

अध्यात्ममूर्ति श्री सद्गुरुदेव स्तवना

शासन तणाशिरोमणि स्तवना करूं 'गुरु कहाननी'
तुज दिव्यमूर्ति जळहळे अध्यात्मरसना राजवी. 1

अध्यात्म कल्पवृक्षना फळनो रसीलो तुं थयो.
तुं शीघ्र रस साधक बन्यो अंतर तणी सृष्टि लह्यो. 2

तुं लोक संज्ञा जीतिने अलमस्त थई जगमां फर्यो,
परमात्मानुं ध्यान ज धरी तुज आत्मने स्वच्छ ज कर्यो. 3

प्रतिबंध टाळी लोकनो आनंदनी मोजे रह्यो,
तें शुद्ध चैतन धर्मनो अनुभव हृदयमांही लह्यो. 4

अंतर तणा आनंदमां शुरता लगावी प्रेमथी,
शुभ द्रव्य भावे तप तपेथी शुद्धि करी शुभ नेमथी. 5

नींदा करी ना कोईनी नींदा करी सहुं ते सही,
शुद्ध आत्मरस भोगीभ्रमर शुभ दृष्टि तारामां रही. 6

औदार्य ने तें आदरी जगमां जणाव्युं बोलथी,
आचारमां मूकी घणुं जोयुं अनुभव तोलथी. 7

तारा हृदयनी गूढता त्यां मूढ जननी मूढता,
जे आत्म योगी होय ते जाणे खरे तव शुद्धता. 8

पहोंच्यो अने पहोंचाडतो तुं लोकने शुद्ध भावमां,
अध्यात्म रसीया जे थया बेठा खरे शुद्ध नावमां. 9

दुनिया थकी डरतो नथी आशा नथी ममता जरी,
ज्यां हुं वसुं त्यां तुं नहीं ए भावना विलसे खरी. 10

स्याद्वाद पारावार छे आनंद अपरंपार छे,
साचा हृदयनो संत छो परवा नथी जयकार छे. 11

आशा नथी कीर्ति तणी अपकीर्तिने गणतो नथी,
लोको मने ए शुं कहे त्यां लक्ष ने देतो नथी. 12

व्यवहारनां भेदो घणा त्यां कलेशने करतो नथी,
लागी लगनवा आत्मनी बीजुं कशुं जोतो नथी. 13

तें भाव संयम बोटमां बेसी प्रयाण ज आदर्युं,
भव पथोदधि तरवा विषे तें लक्ष अंतरमां धर्युं. 14

जे जे भर्युं तुज चित्तमां ते बाह्यमां देखाय छे,
अध्यात्म रस रसीया जनोथी तुज हृदय परखाय छे. 15

एकांतथी अध्यात्ममां जे शुष्क थईने चालतो,
चाबुक तेने मारीने व्यवहार मांही वाळतो. 16

शासन तणा शिरोमणी स्तवना करूं, 'गुरु कहाननी',
तुज दिव्यमूर्ति जळहळे अध्यात्मरसना राजवी. 17

***

स्तवन

(आज मारे घेर थया लीला ल्हेर राम)

आज लीला ल्हेर, थई प्रभु म्हेर
जिनराज बिराजे मनोमंदिरिये. आज०

में तो जिनवरना मुखडा भाळीया,
में तो भवकेरा दुःखडा टाळीया;
मारो नाथ मल्यो तेणे कारणे जीरे.....आज लीला० 1

मुने पंचम काळे जिन भेटिया,
मारा आतममां सुख उलटिया;
प्रभु मोंघेरा दर्शन देखीया जीरे.....आज लीला० 2

आज लीला ल्हेर, हुई प्रभु म्हेर;
गुरुराज बिराजे मारे मंदिरिये रे.....आज०

मारे चोथा आरा रे फरी आविया,
मारे कहान जेवा रे गुरू पाकीया;
जेणे जगतमां अमृत वरसाविया जीरे.....आज लीला० 3

धर्मकाळ देखी इंद्र आवता,
प्रभु कहाननी आरति उतारता;
ए तो लळी लळी शीर झुकावता जीरे.....आज लीला० 4

प्रभु सेवक हर्षे नाचता, ए तो धर्म प्रभाव देखी राचता
गुरु कहान महिमाने वधावता जीरे.....आज लीला० 5

मरू भूमि पण सुरतरू सम थई
मेरू थकी अति अति इष्ट थई;
जीहां सत् देव गुरु बिराजताजी रे.....आज लीला०

जीहां सत् धर्मकाळ फरी आविया जीरे.....आज लीला०

प्रभु सेवक लळी पाय लागतां जीरे.....आज लीला० 6

***

श्री जिन स्तवन

आवो आवो गावोने नरनार, वंदन जिनने करीए;
जोडो जोडो हैयाना तारे तार, वंदन जिनने करीए....आवो0

तननो हुं तंबुर बनावुं, प्रभु भक्तिए धून मचावुं;
ऊठे ऊठे रोमे रणकार.....वंदन0 1

मन पुष्पोनो अर्घ रचशुं, पूजन मारा प्रभुना करशुं;
गाशुं गाशुं अंतरना आधार.....वंदन0 2

अलख निरंजन देव समरवा, ज्योति तारा जीवन भरवा;
वागे वागे सेवकनी सतार.....वंदन0 3

आवो आवो गावोने सहु नरनार, वंदन गुरुने करीए;
तननो हुं तंबुर बनावुं, वाणीनी हुं वीणा बजावुं;
वागे वागे गुरु गुण तणा रणकार.....वंदन0 4

बे करनां हुं झांझ बनावुं, ताले ताले नाच नचावुं;
गाजे गाजे गुरुजीना जयकार.....वंदन0 5

गाजे गाजे वीरना लघुनंदन आज.....वंदन0
जयवंत वर्तो सेवकना व्हाला गुरुदेव.....वंदन0 6

***

वीश विरहमान जिन स्तवन

(जय वर्धमान प्रभो-राग)

जिनवर पूजारी प्रभु में जिनवर पूजारी,
चरण कमळकी पूजा करके सेवक सुखीयारी. हां. जिन0 1

आज मेरे दील दर्पनमें, छाये वीश भगवान;
विरह व्यथाको काट काटके, खीले आतम हीर हां. जिन0 2

ज्योति भर्या है ज्ञानदीवा, प्रभु खूब खूब खिला है,
दील भरे नयनोसे निरखुं, प्रगटे चिद् किलोल...हां जिन० 3

दर्दो हठे दिलके तेरा, नाथको सेवी ले;
है भव रोग रे वैद ए साचा, दुःखोको बुझी ले. हां. जिन० 4

मिला दे वीस जिनवर मोहे, श्री सद्गुरू सुकहान;
वीतराग के मुखदर्शनसे, थावे लीला ल्हेर. हां. जिन० 5

***

स्तवन

मुक्ति के पंथ दिखाने वाले जिनजीके,
चरणोमें में नमुं निशदीश;
जो भव्य जीवो के जीवन साथी,
मैं हुं तुम दर्शनके प्यासी.....1

जीसकी ज्ञान सिंधुकी महिमा
कैसे करूं अल्प मति में;
वीतराग के बोधामृतमें,
पीवुं अहरनीश ओ जगदीश.....2

जो परभावोंका सदा है त्यागी,
तीन लोकसे सदा वैरागी;
जगत ज्ञेयमें सदा ज्ञात है,
धन्य धन्य मातृ उनकी है.....3

उसीकी द्रव्य गुण पर्यायको,
जाने वोही उसी सम होवे;
आत्म धर्म से लीनतारे लगी,
असंख्य प्रदेशे जिनभक्ति जगी.....4

जिनकुंदामृत रहस्य प्रकाशी,
कहान सूर्य जगमें जगा है;
कान गुरुकी आत्मकळा सुनकर,
नरेन्द्र देवेन्द्र आते है नमकर
समीप रहु तनधन अर्पण कर.....5

***

श्री जिन स्तवन

अमे तो जिनवरना संतान, जिनवर पंथे विचरशुं के एना पंथे विचरशुं.

गाता प्रभुना गुणगान, उज्जवल आतमाने वरशुं,
जीवन वीताव्युं स्व अर्थे जेणे, राज पृथ्वी त्यागी एणे;
पामी पूरणदशा ज्यां मान.....जिनवर० 1

स्वतंत्रताना सूत्र शिखव्यां, भूल्यां पंथीने पंथ बताव्या;
छे ज्यां ज्ञान-दर्श-तप-भाव.....जिनवर० 2

धर्मपदेश दीधा एणे, चार तीर्थ स्थापीने जेणे;
दीधां द्रव्य-पर्यायनां ज्ञान.....जिनवर० 3

राग-द्वेष जित्या जयकारी, थया आत्मलक्ष्मीना स्वामी;
पामी प्रभुजी केवलज्ञान.....जिनवर० 4

***

श्री सीमंधर जिन स्तवन

जिनवर दर्शनना जाग्या छे कोड,
वीतरागी शीतल ए छांयडी;
मूर्ति जिणंदानी जगमां अजोड,
सोहे छे शीळी ए छांयडी;
महा विदेह बिराजे सत्यदेवीना नंदजो,
तरवा भवपार जिहां सिद्धया अनंतजो;
क्रोधमान मायानां बंधन छोड, वीतरागी० 1

शरणे तुमारे आ भमता संसारजो,
संसार असार मारे तारो आधार जो;
साची जिन भक्तिथी भव बंध तोड. वीतरागी0 2

नीशदिन हुं गाउं गुण भावे जिणंदना,
महा विदेहवासी ए सिद्धि देनारना;
पाम्या शिवलक्ष्मी ज्यां मुनि क्रोडा क्रोड. वीतरागी0 3

श्री वीतराग केरी छांयडीमां वसता,

श्री जिनराजनां चरण कमळ सेवतां;
ज्ञान दर्श चारित्रनां पूराय क्रोड. वीत0 4

जिनवर चरणना जाग्या छे कोड,
वीतरागी शीळी ए छांयडी;
गुरुवर चरणनां जाग्या छे कोड,
संत केरी शीळी ए छांयडी;
सुवर्णपुरे बिराजे उजमबाना नंद जो,
तरवा भवपार जे अपूर्व तीर्थ धामजो;
आत्मिक कल्याणना पूराय कोड. संत0

***

श्री सीमंधर जिन स्तवन

(भक्ति रसना राग)

लेजो सेवा प्रभुकी लेजो,
लेजो ए सुखियारी, सहु लेजो ए सुखियारी.

नौका तेरी तरती जाये, तुमने मेरा सुकान बनाये;
चलकर मोक्ष नगरमें जाये, भवसागर को तरके आये;
आत्माकी धून मचाये, सौ आत्माकी धून मचाये.
नमे नाथ जिणंदा, सहु नमे नाथ जिणंदा. लेजो0 1

सीमंधर प्रभुजी नयने छांये, मनमें मेरे तुमही बिछांये,
निशदिन तुम जिनंद को ध्यावे, दुःख सेवक का पलमें जाये;
भक्ति की खूशबो बहेकाये, हां भक्ति की खूशबो बहेकाये;
बने पाद विहारी, मैं बने पाद विहारी, लेजो0 2

***

श्री पद्मप्रभ जिन स्तवन

मलिया पद्म प्रभुजी प्यारा, मलिया पद्म प्रभुजी प्यारा.....म0

ये रसिया मुज अंतर वसिया, शिवामृतके क्यारे है,
जय न्यारी हय तेरी माया (2), सुखकारी हितकारी है;
मंजुल ज्योति दील सरोवर, खीली खीली अलबेली, प्यारा0

जनम जनम भर पापो अपना, ध्यान गंगामें डुबाते हय;
आनंद नाव चलाते है, मृगति के घाट दिखाते हय;
जिसका नूर सूरजसे न्यारा, मुरति छेलछबीली....प्यारा0

जीवन बगीचा गुनल फूलडां, खीलते सुख दीप जले,
वो स्वामीको भजने वाले, दुनिया छोडी पार चले;
आज ऊठत है सेवक सुवेरा, जिनवर तान रसीली.....प्यारा0

***

श्री सीमंधर जिन स्तवन

देजो दिलासा दिलवर दिलना, सेवक पर करी म्हेर;
जिनवर आवो अमारा-देजो0 1

दीलडाना मारा देव तमे छो, समरुं छुं आनंदभेर. जिन0 2

स्मरणो तुमारा तरे छे नजरे, निरखुं छुं हुं ठेर ठेर. जिन0 3

दास दुःखी प्रभु आप सुखी ए, जोई शको प्रभु केम. जिन0 4

सेवकने प्रभु पोताना करीने राखो गणधरनी जेम. जिन0 5

चोरी लीधुं में हैयुं तमारुं, जाशो हवे शी पेर. जिन0 6

भाग्य उदयथी दर्शन पायो, आवी छे नवनिधि घेर. जिन० 7

महा विदेहना सीमंधर, नाथजी रोकोने भवना फेर. जिन० 8

गांडी ने घेली भक्ति करीने, जईशुं शिवपुर शहेर. जिन० 9

श्री गुरुदेव मारा विनती करे छे, आवो सीमंधर नाथ. जिन० 10

श्री गुरुदेवना रोमे रोमे, वसे सीमंधर नाथ, जिन० 11

श्री गुरुदेवना रोमे रोमे, वसे वीतरागी देव, जिन० 12

दर्शन वंदन पूजन करतां, आनंदना होशे ढेर, जिन० 13

आवो जो एकवार सेवक जीवनमां, वरताय लीला लहेर. जिन० 14

* * *

श्री विदेही जिन स्तवन

(रखीयां बंधावो भैया-राग)

भवीया जगावो सैयां, आनंद आया रे, भवीयां०

मूर्ति छे मनहारी, विदेही जिनवरनी प्यारी;
सेवो जिनंदा भैया, आनंद आया रे.....भवी०1

ज्योति जे मुख पर छाई, मुज मन दरपनमें आई;
देव दयालु भैया, आनंद आया रे.....भवी० 2

ऊलट भरभर आवो उत्तम गुणगण गावो;

देखोने मुक्ति मैया, आनंद आया रे.....भवी० 3

आव्यो छुं धरी हुं आशे, आवोने मम आवासे;

तलसे हमारां हैयां, आनंद आया रे.....भवी० 4

भक्तिसें जिनगुण गाये, सेवक मन घर आये;

तारे गुरुजी नैया; आनंद आया रे.....भवी० 5

* * *

जिनस्तवन

अरहन्त भक्तके संकट हरते आये. टेक

सीताजी की अग्नि परीक्षा, करी आन देवों ने रक्षा,

अग्नि में कमल रचाये मोरा जिणंदा. अर० 1

भरी सभामें द्रौपदी ठाडी, दुःशासनने खेंची साडी,

आपहि चीर बढाये मोरा जिणंदा. अर० 2

शीलवती थी सोमा नारी, सास ने उस पर विपदा डारी,

सर्प से फुल बनाये मोरा जिणंदा. अर० 3

शेठ सुदर्शन का दुःख हरने तलवारसे फुलमाळा करके,

आपहि देव पठाये मोरा जिणंदा अर० 4

ग्राह ग्रसित गजराज बचायो, सुलोचना का कष्ट मिटायो,

गंगा तट पहुँचाये मोरा जिणंदा अर० 5

मानतुंग के ताले तोडे, भोज नृपति के मान मरोडे,

जिनमत भक्त बनाये मोरा जिणंदा. अर० 6

सागर से श्रीपाल निकाला, रैनमंजूषा का दुख टाला,

पति श्रीपाल मिलाये मोरा जिणंदा अर० 7

दीन दयाल दयानिधि स्वामी, घट घट के प्रभु अंतरयामी,

'मकखन' हृदय समाये मोरा जिणंदा अर० 8

* * *

श्री विष्णुकुमार मुनि स्तवन

(चाल-तेरे पूजनको भगवान)

जय जय मुनिवर विष्णुकुमार, गुरू तुम धर्म के रक्षणहार.

दुष्ट बलि ने कुमति उपाई, मुनियों की नर यज्ञ रचाई;
मच गया गजपुर हा हा कार.....जय० 1

संघ घातकी खबर ये पाकर, पुष्पदन्त मुनि अति घबरा कर;
आन के आप से करी पुकार...जय० 2

तुम हो स्वामी अति बलधारी, तप बल सिद्धि प्राप्त है भारी;
धर्म पै चलता आज कुठार.....जय० 3

बौने द्विज का भेष बनाया, चमत्कार तप का दिखलाया;
पडगया बलि नृप चरण मंझार.....जय० 4

मुनियों का उपसर्ग हटाया सबको धर्म दया बतलाया;
हुआ जिनधर्म का जय जयकार....जय० 5

क्षमाभाव कर बलि को छोडा, उसने हिंसा से मुख मोडा;
जिनमत धार लिया सुखकार....जय० 6

गजपुर के श्रावक नरनारी कठिन प्रतिज्ञा दिल में धारी,
कष्ट टरे पर करें अहार.....जय० 7

विष्णु मुनि आदर्श हमारे, प्रेम सुपाठ पढावन हारे;
जय बोलो शिवराम पुकार....जय० 8

* * *

श्री मुनिराज स्तवन

देखोजी इक परम गुरुने कैसा ध्यान लगाया है, देखोजी० (टेक)

घरके भोग रोग सम लागे, बनका बास सुहाया है;
काम क्रोध माया मद त्यागी, नगन जु भेष बनाया है. देखोजी० 1

बरसाकाल बसत है तरुतल समताभाव दिखाया है;
लिपटें डांस जहर विषयाले, खेद न मनमें ल्याया है देखोजी० 2

शीतकाल तटनीतट उपर, परत तुषार न छाया है;
कंपै देह चलै चौबारी, जैनजति कहलाया है, देखोजी० 3

ग्रीषमकाल बसैं परबतपर, सूरज उपर आया है;
चलत पसेव जरत अति काया, कर्मकलंक बहाया है देखोजी० 4

ऐसे गुरु के चरन पूजकर, मनवांछित फल पाया है,
दौलत एसे जैनजतिको, बारबार सिर नाया है. देखोजी0 5

* * *

शास्त्र भक्ति

(शिखरणी छंद)

एकेला ही हूँ मैं करम सब आये सिमटिके;
लिया है तेरा शरण अब माता सटकिके;
भ्रमावत है मोको करम दुःख देता जनमका,
करुं भक्ति तेरी, हरो दुख माता भ्रमनका. 1

दुःखी हूआ भारी, भ्रमत फिरता हू जगत में,
सहा जात नाहीं अकल घबरानी भ्रमन में,
करुं क्या मां मोरी, चलत वश नाहीं मिटनका;
करुं भक्ति तेरी, हरो दुख माता भ्रमनका. 2

सुनो माता मोरी, अरज करता हूं दरदमैं;
दुःखी जानों मोको, डरप कर आयो शरनमैं;
कृपा ऐसो कीजे, दरद मिटजावै मरनका,
करुं भक्ति तेरी हरो दुःख माता भ्रमनका. 3

पिलावै जो मोंको, सुबुधिकर प्याला अमृतका;
मिटावै जो मेरा सरव दुःख सारा फिरनका;
परों पावां तेरे हरो दुख सारा फिकरका;
करुं भक्ति तेरी हरो दुःख माता भ्रमनका. 4

(सवैया)

मिथ्या मत नाशवेको ज्ञानके प्रकाशवेको
आपा परभासवेको भानुसी बखानी है;
छहों द्रव्य जानवेको बंधविधि भानवेको,
स्वपर पिछानवैको परम प्रमानी है. 5

अनुभौ बतायवेको जीवके जतायवेको,
काहू न सतायवेको भव्य उर आनी है;
जहां तहां तारवेको पारके उतारवेको,
सुख विसतारवेको ये ही जिनवानी है. 6

(दोहा)

यह जिनवानी की थुती, अल्प बुद्धि परमान
हम सेवक विनती करै, जे माता मोहि ज्ञान 7

हे जिनवानी भारती तोहि जपों दिन रैन;
जो तेरा शरना ग्रहै, सो पावै सुख चैन. 8

जा वानी के ज्ञानतैं, सूझे लोकालोक,
सो वानी मस्तक चढों, सदा देत हों धोक. 9

* * *

अध्यात्ममूर्ति सद्गुरुदेवने

(हरिगीत)

तुज पादपंकज ज्यां थयां ते देशने पण धन्य छे,
ए गाम-पुरने धन्य छे, ए माताकुळज वन्द्य छे;

तारां कर्यां दर्शन अरे ! ते लोक पण कृतपुण्य छे,
तुज पादथी स्पर्शाई एवी धूलिने पण धन्य छे.

तारी मति, तारी गति, चारित्र लोकातीत छे;
आदर्श साधक तुं थयो, वैराग्य वचनातीत छे,

वैराग्यमूर्ति, शान्तमुद्रा; ज्ञाननो अवतार तुं,
ओ देवना देवेंद्र व्हाला ! गुण तारा शुं कथुं ?

अनुभवमहीं आनंदतो सापेक्ष दृष्टि तुं धरे,
दुनिया बिचारी बावरी तुज दिल देखे क्यां अरे ?

चारा हृदयना तारमां रणकार प्रभुना नामना,
ए नाम सोहं नामनुं, भाषा परा ज्यां काम ना,

अध्यात्मनी वातो करे, अध्यात्मनी दृष्टि धरे,
निज देह-अणुअणुमां अहो ? अध्यात्मरस भावे भरे;

अध्यात्ममां तन्मय बनी अध्यात्मने फेलावतो,
काया अने वाणी-हृदय, अध्यात्ममां रेलावतो,

ज्यां ज्यां तमारी दृष्टि त्यां आनंदना ऊभरा वहे,
छाया छवायें शान्तिनी तुं शांतमूर्ते, ज्यां रहे;

अध्यात्ममूर्ति शान्तमुद्रा ज्ञाननो अवतार तुं,
ओ कहानदेव देवेन्द्र व्हाला ! गुण तारा शुं कथुं ?

* * *

गुरुदेवाना उपकार

(मंदाक्रान्ता)

ज्यां जोउं त्यां नजर पडतां राग ने द्वेष हा ! हा !
ज्यां जोउं त्यां श्रवण पडतां पुण्य ने पाप गाथा;
जिज्ञासुने शरणस्थळ क्यां ? तत्त्वनी वात क्यां छे ?
पूछे कोने पथ पथिक ज्यां आंधळा सर्व पासे.

(शार्दुलविक्रीडित)

एवा ए कळिकाळमां जगतना कंइ पुण्य बाकी हतां,
जिज्ञासु हृदयो हतां तलसतां सद्वस्तुने भेटवां;
एवा कंईक प्रभावथी, गगनथी ओ कहान तुं ऊतरे,
अंधारे डूबता अखंड सतने तुं प्राणवंतु करे,

जेनो जन्म थतां सद्द जगतना पाखंड पाछां पडे,
जेनो जन्म थतां मुमुक्षु हृदयो उल्लासथी विक्से;
जेना ज्ञानकटाक्षथी उदय ने चैतन्य जूदां पडे,
इन्द्रो ए जिनसुतना जनमने आनंदथी ऊजवे.

(अनुष्टुभ)

डूबेलुं सत्य अंधारे आवतुं तरी आखरे;
फरी ए वीर-वाक्योमां प्राण ने चेतना वहे.

* * *

प्रभुजी पधार्या विषे

धन्य धन्य आजनो दिन, अम घेर प्रभुजी पधार्या;

धन्य धन्य आजनो दिन, अम घेर जिनवर पधार्या 1

नेमप्रभु शान्ति जिणंद पधार्या, पधार्या सीमंधर देव--- अमघेर-प्र. 2

महाविदेहवासी प्रभुजी पधार्या, जगत उद्धारक देव--- अमघेर-प्र. 3

कल्पवृक्षनी छांया छवाणी, जय नाद इन्द्रो गाय---अमघेर- प्र. 4

रत्न राशि अम आंगणे फळिओ, सिध्यां मन वंछित काज--अमघेर-प्र. 5

गुणमणि गुणनिधि प्रभुजी पधार्या, मनवंछित देनार---अमघेर-प्र. 6

जिनबिंब जळहळ ज्योति जगे छे ज्ञान अजवाळां अमाप--अमघेर-प्र. 7

दिव्य ध्वनिना नाद गाजे छे समवसरण मोझार-अमघेर--प्र. 8

छप्पन कुमारी प्रभु महोत्सव करे छे इन्द्राणी जयनाद गाय--अमघेर-प्र. 9

शक्रेन्द्र चमरेन्द्र चमर ढाळे छे, धन्य धन्य प्रभु वीतराग--अमघेर-प्र. 10

अंतर मारुं आनंदथी ऊछळे पधार्या श्री वीतराग अमघेर-प्र. 11

सुवर्णपुरी सद्भाग्य खील्या छे जिनमुद्रा महोत्सव थाय---अमघेर-प्र. 12

* * *

(राग हाथी झुले बागमां)

सुवर्णपुरीमां सोना सूरज ऊगियो रे जिनजी
पूर्या पूर्या मोतीना चोक सुरनर आवो आवो प्रतिमाजीने पूजवा रे

सीमंधर प्रभुजी आव्या छे अम आंगणे रे, जिनजी
नेम जिणंद प्रभु आव्या जय जयकार सुरनर 0

भरतभूमिमां शत सागर उछळी रह्यां रे, जिनजी
आव्या छे मारा त्रण भवनना नाथ. सुरनर0

प्रथम जिणंद प्रभु ऋषभदेवने वांदशुं रे जिनजी
वांदु वांदु महावीर प्रभु देव. सुरनर0

कुंदकुंद आदि आचार्य प्रभुने वांदशुं रे जिनजी
वांदु वांदु सद्गुरुनां ढुं पाय. सुरनर0

इंद्र नरेंद्र आवे प्रभुजीने भेटवा रे. जिनजी
इंद्राणी कांइ पूरे मोतीना चोक. सुरनर0

देवदुंदुभी वाजा वागे आंगणे रे, जिनजी
छप्पन कुमारी घुघरीना घमकार. सुरनर0

जैनशासनना जय जयकार गवाय छे रे, जिनजी
शुद्ध चैतन्यना गाजे छे ए नाद. सुरनर0

सत्यतणा पुर आव्या छे अम आंगणे रे, जिनजी
प्रगट्या प्रगट्या शुद्ध स्वरूपना तेज. सुरनर0

* * *

(राग-बाळब्रह्मचारी जिणंदपद धारी)

सुवर्णपुरी आज पावन थई छे, सीमंधर प्रभुजी पधार्या रे
महाविदेहे विभू विचरता, भरतक्षेत्रे बिराज्या रे. सुवर्णपुरी0-1

जगत जननीए पुत्र जनमियो, तीर्थंकर त्रिलोकीरे,
पुत्र तमारो धणी अमारो, वीर वीतरागी प्रभुजीरे. सु0-2

भरतना भक्तोनी अरज सुणीने, सुवर्णपुरीने सोहावीरे,
शांतिजिनेश्वर नेम प्रभुजी, उपशम रसमां झूलता रे. सु0-3

देव दुंदुभी वाजींत्र वाग्यां, त्रिलोकीनाथ प्रभु आव्या रे,
केसर चंदन भर्या कचोळां, प्रेमे प्रभुजीने पूजुं रे स0-4

सुरनर किन्नर करे तुज सेवा, लाभ अलौकिक लेवा रे,
छप्पनकुमारी मंगळ गीत गावे, इंद्रोना जयनाद गाजे रे. सु0-5

इंद्रो नरेंद्र चमर ढोळे छे, धन्य धन्य प्रभु वीतरागीरे,
कल्पवृक्ष अम आंगणे फळीओ, मनवांछित प्रभु मळीयो रे सु0–6

त्रिलोकदीपक अम आंगणे पधार्या, सुरलोके जयनाद गाजे रे,
ओमकार नादे विश्व गजाव्युं, स्याद्वाद सुवासे रे. सु0–7

सुवर्णपुरीना जिनालयमां, जिनमुद्रा प्रभु सोहे रे,
देव तणा तमे देव पधार्या, धन्य नगर धन्य भूमीरे. सु0–8

* * *

(जुओरे झवेरीना बेसणा ते-राग)

श्री सीमंधर स्वामीने विनवुं, जीरे गणधरने लागुं छुं पाय
जुओरे अरिहंतोनी दिव्यता.

प्रभुने आवतां सिंहासन रचाय छे, प्रभुने चालतां कमळदळ
अपार. जुओरो.

धर्मचक्र चाले प्रभुजीनी आगळे, धर्म ध्वज सुरपतिने हाथ. जु0

तिहां सोनां रूपाना गढ रचाय छे, रत्न जडीत कांगरा होय जु0

शीतळ नदीयोनां जळ कल्लोल करे, वन उपवन सुगंध रसाळ जु0

प्रभु मंडपमां मंदिर रचाय छे, धजा पंक्तिनो नहि पार. जु0

चारे छेडे चार मानथंभ, अति शोभे, तेना रक्षक द्वारपाळ चार. जु0

गंधकुटी सिंहासन कमळ शोभे तिहां बिराजे प्रभुजी साक्षात् जु0

छत्र उपर छत्र अति शोभता, अशोक वृक्षनी शीतळ छांय. जु0

भामंडळ तेजे प्रभु दीपता, अखंड ज्योति छे जळहळकार. जु0

दैवी वाजानो रणकार वाजंतो, ताल वीणानो गेबी रणकार. जु0

परिषद बार प्रकारनी दीपती, दिव्य ध्वनिना छूट्या छे नाद जु0

गेरगंभीर ध्वनिना झरणां झरे, गणधर देवो पण विस्मय थाय जु0

नाद सुणी भक्तिथी देवो नाचता, पुष्प वृष्टि करे छे थोके थोक. जु0

गणधर अप्रमत प्रमत्तमां झुलतां, संधी करे ध्वनिनी अखंड. जु0

अष्ट सहस्त्र लक्षणे प्रभु शोभता, सो इन्द्रो पूजे प्रभु पाय. जु0
इंद्रो मुगट झुकावे प्रभु चरणमां अहो ! अहो ! तुज दिव्य देदार. जु0
अष्ट मंगळ प्रतिहार शोभता, इंद्र देवेंद्रनो नहि पार. जु0
धन्य धन्य प्रभुजीनुं समोसरण, धन्य धन्य ए साक्षात् भाव. जुवो.

* * *

(राग-वेलुं छूटी वाडना वड हेठ)

अगर चंदनना जिन द्वार---2
केसरभीनां रे मंदिर आंगणा जिनराज,
आंगणे कांइ रत्न जडावो---2
मोतीना चोक पुरावो प्रभु पधारे आज.
इंद्रवेलुं छूटी मंदिर द्वार---2
रत्ने जडित रथ छूट्या आव्या छे वीतराग.
इंद्र नरेन्द्र बोले जय जयकार---2
सुवर्णपुरे सोळ कळाए सूरज ऊग्यो आज.
इंद्राणी पूरे मोती चोक---2
छप्पन कुमारिका नाचे छे थै थै कार.
प्रभुजी पधार्या मंदिर द्वार---2
मोतीडे वधाव्या भक्तोने भेट्या छे भगवान,
भक्तोने हरख न माय---2
जिनवरनी मुद्रा सोहे अंकन्यास विधि थाय,
धन्य धन्य आव्या वीतराग---2
त्रिलोकी जग तारक प्रभुजी पधार्या छे जिनराज
प्रभु महिमा मुखथी न थाय---2

सहस्त्र मुखे वीतरागी गुण कही न शकाय.

* * *

(मोर जाजो उगमणे देश ए-राग)

महाविदेही सीमंधर प्रभुराज, सुवर्णक्षेत्रे आव्या छो वीतराग,
शांति जिणंद नेमीश्वर आव्या छे भगवान.
सुरलोके आसन कंपाय सुरलोके आसन कंपाय,
सुरेन्द्र विचारे प्रभुना महोत्सव रूडा थाय,
धन्य धन्य भरत क्षेत्र मोझार धन्य धन्य भरत क्षेत्र मोझार,
सुवर्णपुरे प्रभुनी प्रतिष्ठा उजवाय.
देव दुदुंभीना नाद देव दुदुंभीना नाद.
इन्द्रो देवेन्द्रो प्रभुना मंगळ महोत्सव गाय,
इन्द्राणी पूरे मोती चोक, इन्द्राणी पूरे मोती चोक,
छप्पन कुमारिका नाचे छे थै थै कार.
जिनबिंबना स्थापन थाय, जिनबिंबना स्थापन थाय.
भव्य भविक जनना हरख न माय
सुरनर सङ्घ जयवर गाय, सुरनरसङ्घ जयवर गाय
सुवर्णपुरीमां आजे अठाई ओच्छव थाय.
नीरख्या में त्रिभुवन नाथ, नीरख्या में त्रिभुवन नाथ
मन वांछित प्रभु भेट्या, सिद्धां छे सङ्घ काज
गुणनिधि गुणमणि देव, गुणनिधि गुणमणि देव
रत्न राशिरे मारे आंगणे वीतराग
सुवर्णपुर भविक जन उभराय, सुवर्णपुरे भविक जन उभराय
वीतराग शासन जयजयकार उचराय
आव्या छे कांई मोक्षना पूर, आव्यां छे कांई मोक्षनां पूर

तरणतारण प्रभु पधार्या शासननूर.

* * *

(रत्ने रूडुं जडीयुं ते---राग)

सुरेंद्र आसन कंपे, सुरेंद्र आसन कंपे
रूडा भरतक्षेत्रे भव्य जागे, जिणंद प्रभु आवे सुवर्णपुरी गाजे

देव नाद थाये दुदुंभी वाजा वागे
जयनाद जिनजीना गाजे. जिणंद0 सुवर्ण0

धन्य धन्य तीर्थ क्षेत्र सुवर्णपुर पवित्र,
ज्यां पधार्या त्रिलोकनाथ इश. जिणंद0 सुवर्ण0

इन्द्र इन्द्राणी आवे वज्र स्वस्तिक पूरावे,
भेटे वीतराग मुद्राने भावे जिणंद प्रभु आवे. सुवर्ण0

सूरतरु फळिया वांछीत देव मळिया,
मारा भव भ्रमण दुख टळिया जिणंद0 सुवर्ण0

उपशम रस कंद, त्रण भुवनना जिणंद0
प्रभु दिव्य ध्वनि जाय द्वंद. जिणंद0 सुवर्ण0

भव्य भाग्य खीले आत्मरस झीले,
प्रभु तारनार तारो मने तीरे. जिणंद0 सुवर्ण0

स्याद्वादनी सुवासे प्रभु ओमकार नादे
प्रभु चैतन्यघन देव जागे. जिणंद0 सुवर्ण0

निर्मल ज्ञानघन जळाहळ ज्योति देव.
प्रभु परम वीतरागी गुण खाण. जिणंद0 सुवर्ण0

गुणनिधि गुणआगर प्रभु समरसीसागर.
प्रभु आपोने शिवपुरवास. जिणंद प्रभु आवे.

* * *

कंकु छांटी कंकोतरी मोकलो,
प्रभुजीना भक्तो आवे सहु भावे
मंगळ गीत गावे, प्रतिष्ठा मूरत ढुंकडा
सीमंधर प्रभु शांतिजिणंदजी, मूरत ढूंकडा0

नेमनाथ प्रभु महावीर प्रभु धीर, कल्याणिक
रूडा रत्ने जडित प्रभुजीना मांडवा,
हीरा मोती माणेकना शणगार, घुघरीना घमकार.
मूरत आव्या ढुंकडा0

इन्द्र ऐरावत हाथी लई आवीया,
अद्भुत अंबाडीना शणगार, देव रचना अपार.
मंगळ मूरत ढुंकडा0

रत्न जडित हाथीए प्रभुजी शोभता,
सुरेंद्र चमर ढोळे छे प्रभु पास, त्रिलोकी छो नाथ,
प्रतिष्ठा मूरत ढुंकडा0

प्रभुजी आव्या छे मंदिर चोकमां,
भव्य भक्तोना भाग्य अपार, धन्य धन्य प्रभु अवतार
प्रतिष्ठा मूरत ढूंकडा0

जिनजी आव्या छे जिनालय द्वारमां,
सद्गुरु देवनो हरख अपार, भगवान भेट्या आज
महिमा मुखथी न थाय मंगळ प्रतिष्ठा थाय छे.

* * *

हलमलतो हाथी ने रत्न अंबाडी,
सोहे सीमंधर प्रभुजी शांतिजिणंदजी राज–
धन्य धन्य त्रिलोकी प्रभुजी भले रे पधार्या.

भले रे पधार्या ने भाग्य अमारा
छ खंड धरतीमां जयनाद गाज्या हो पद्म प्रभुजी–
सुवर्णपुरीमां विभुना पंच कल्याणिक0

इन्द्र नरेंद्र प्रभुने चमर ढोळे छे,
छडीदार लोकांतिक देव होय रे हो नेम प्रभुजी
सुवर्णपुरीमां सत्रु शासन झूले छे.

इन्द्राणी स्वस्तिक मंगळ मोतीना पूरे,
छप्पन कुमारी थै थै नाचे महावीर प्रभुजी–
वीतराग शासन शोभे छे सुवर्णपुरीमां

देवे देवेंन्द्रो पुष्प वृष्टि करे छे,
सुघोषाघंट सर रसाला जिनराज प्रभुजी,
धन्य धन्य विदेही देवा नयणे रे दीठा

अमीय भरीरे मूर्ति प्रभुनी निहाळी,
शांत सुधासम रसनी छांया छवाणी राज–
धन्य धन्य त्रिलोक प्रभुनी मुद्रा निहाळी

* * *

महावीराष्टक-भाषा

(शिखरिणी-राग)

जिन्होंकी प्रज्ञामें, *मुकुरसम चैतन्य जड भी,
स्थिती ध्रौव्योत्पत्ती युत्त झलकते साथ सब ही.
जगत साक्षी मार्ग प्रगट करता सूर्यसम जो,
महावीरस्वामी दरश हमको दें प्रगट वें. 1

---

* मुकुरसम = दर्पण समान। ** क्रोधादिनो अतिशयक्षय।

जिन्होंके दो चक्षू पलक अरु लाली रहित हो,
जनोकों दर्शाते, हृदयगत **क्रोधातिलयको,
जिन्होंकी शान्तात्मा अतिविमलमूर्ति स्फूट महा. महावीर0 2

नमंते इन्द्रोंके, मुकुटमणिकी कान्ति धरता,
जिन्हों के चर्णोका युग, ललित संतप्त जनको,
भवाग्निका हर्ता, स्मरण करते ही सुजल हैं. महावीर03

जिन्होंकी पूजासे, मुदित मन हो ***मेंढक जबै,
हुआ स्वर्गी, ताही समयगुणधारी अतीसुखी;
लहैं जो मुक्तिके सुख भगत तो विस्मय कहां ?महावीर0 4

*** देडको

तपेस्वर्ण ज्यों भी, रहित वपुसे, ज्ञानगृह है,
अकेले नाना भी, नृपतिवर सिद्धार्थ सुत है;
अजन्मा भी श्रीमान् भवरत नहीं अद्भूतगती. महावीर0 5

जिन्होंकी वाग्गंगा, अमल नय कल्लोल धरती,
न्हवाती लोंगोंको, सुविमल महा ज्ञान जलसे;
अभी भी सेते हैं, बुधजन महा हंस जिसको, महावीर0 6

त्रिलोककी जेता मदनभट जो दुर्जय महा,
युवावस्थामें भी, वह दलित कीना स्वबलसे;
प्रकाशी मुक्ति के, अति सुसुखदाता जिनविभू. महावीर0 7

महामोह व्याधी, हरण करता वैद्य सहज,
विना इच्छा बंधू, प्रथित जग कल्याण करता;
सहारा भव्यों को सकल जगमें उत्तम गुणी,
महावीर स्वामी दरश हमको दे प्रगट वे.....8

(श्री भागचंद्रजी)

* * *

शान्तिनाथ जिनस्तुति

(दोहा)

विश्वसेन कुल कमलरवि, अचिरा उर अवतार,
धनुष सु चालिस कनक तन, वन्द हुं शांति कुमार. 1

त्रिभंगी छंद (10, 8, 6)

गजपुर अवतारं, शान्तुकुमारं, शिवदातारं, सुखकारं,
निरूपम आकारं, रुचिराचारं जगदाधारं, जितमारं;
कृत अरिसंसारं, महिमापारं, विगतविकारं, जगसारं,
पर हित संसारं, गुणविस्तारं, जगनिस्तारं, शिवधारं. 2

सकल सुरेश नरेश अरु किन्नरेश नागेश,
तिनिगण वन्दित चरण युग वन्द हुं शान्ति जिनेश. 3

श्री शान्ति जिनेशं, जगत महेशं, विगत कलेशं, भद्रेशं,
भवि कमल दिनेशं, मतिमहिशेषं, मदन हरेशं, परमेशं. 4

जन कुमुदनिशेशं, रुचिरादेशं, धर्मधरेशं, चक्रेशं,
भवजलपोतेशं, महिमनगेशं, निरुपमवेशं, तीर्थेशं. 5

करत अमरनरमधुप जसु, वचन सुधारसपान,
वन्द हु शान्तिजिनेशवर, वदन निशेश समान. 6

वररूप अमानं, अरितमभानं, निरुपमज्ञानं, गतमानं,
गुणनिकरस्थानं, मुक्तिवितानं, लोकनिदानं, सध्यानं;
भवतारनयानं, कृपानिधानं, जगतप्रधानं, मतिमानं,
प्रगटितकल्यानं, वरमहिमानं, शिवपददानं, मृदजानं. 7

भवसागर भयभीत बहु, भक्तलोक प्रतिपाल,
वन्द हुं शान्ति जिनाधिपति कुगतिलता करवाल. 8

भंजित भवजालं, जितकलिकालं, कीर्तिविशालं जनपालं,
गति वर्जित मरालं, अरि कुलकालं, वचन रसालं, वरभालं;
मुनि जलजमृणालं, भवभयशालं, शिवठरमालं, सुकुमालं,
भवितरुषतमालं, त्रिभुवनपालं, नयनविशालं, गुणमालं. 8

(कविवर श्री बनारसीदास)

* * *

श्री पार्श्वनाथ भगवाननी स्तुति

(सवैया 31 सा)

करम भरम जग-तिमिर हरन खग,
उरग लखन पग शिव-मग दरसी;
निरखत नयन भविक-जल बरसत
हरषत अमित भविक-जन सरसी;

मदन कदन जित परम धरम हित,
सुमिरत भगत भगत सब डर-सी;
सजल जलद तनु मुकुट सपत फनु
कमठ दलन जिन नमत बनरसी.

सकल करम खल दलन, कमठसठ पवन कनक नग,
धवल परमपद, रमन, जगतजन, अमल-कमलखग.

परमत जलधर पवन, सजलघन समतन शमकर,
पर अघ रजहर जलद सकल जन नत भवभयहर.

यम दबन नरकपद क्षय करन, अगम अतट भव जल तरन,
वर सबल मदन वन हर दहन, जय जय परम अभय करन.

* * *

जीन्हि के वचन उर धारत जुगल नाग,
भये धरनिंद पद्मावती पलक मैं.

तेइ प्रभु पारस महारसके दाता अब,
दीजै मोहि साता दग-लीलाकी ललकमैं.

* * *

तीर्थंकरनी स्तुति

जाकी देह द्युतिसों दसों दिशा पवित्र भइ

जाके तेज आगैं सब तेजवंत रुके हैं.

जाकै रूप निरखि थक्ति महा रुपवंत,
जाकी वपु-वाससों सुवास और लुकै हैं.

जाकी दिव्य-धुनि सुनि श्रवण कौं सुख होतुं,
जाके तन लक्षण अनेक आइ ढुकैं हैं.

तेइ जिनराज जाके कहे विवहार गुन,
निहचै निरखि शुद्ध चेतनसौं चुके है.

* * *

कुन्दकुन्दाचार्यनी स्तुति

जासके मुखारविंदते प्रकास भास वृंद,
स्याद्वाद जैनवैन इन्दु कुंदकुन्द से;
तासके अभ्यास तें विकास भेदज्ञान होत,
मूढ सो लखै नहि कुबुद्धि कुन्दकुन्द से;

देत है अशीस शीस न्याय इन्द चंद जाहि,
मोह-मार-खंड, मारतंड कुन्दकुन्दसे;
विशुद्धि-बुद्धि-वृद्धिदा, प्रसिद्ध ऋद्धि सिद्धिदा,
हुए न, हैं न, होहिंगे मुनिंद कुन्दकुन्दसे.

(कविवर वृंदावनदासजी)

* * *

चंद्रानन जिन

चन्द्रानन जिन चंद्रनाथके, चरण चतुर चित ध्यावतु हैं.
कर्म चक्र चकचूर चिदातम, चिन्मूरतपद पावत है. चंद्रा0

विन इच्छा उपदेश मांहि हित, अहित जगत दरशावतु है;
जा पट्टतट सुरनरमुनि गण चिरु विकट विमोह नशावतु है. चंद्रा0

जाकी चन्द्रवरन तन द्युतिसौं, कोटिक सूर छिपावतु है,
आतम ज्योति उद्योत मांहि सब, ज्ञेय अनंत दिपावतु है. चंद्रा0

नित्य उदय अकलंक अछीन, सु-मुनि उडु चित्त रमावतु है,
जाकी ज्ञान चन्द्रिका लोकालोक मांहि समावतु है. चंद्रा0

साम्य-सिन्धुवर्धन-जगनंदन को शिर हरि-गणि नावतु हैं.
संसय विभ्रम मोह ''दौल'' को, हर-जो जग भरमावतु है.

* * *

वासुपूज्यजिन

जय जिन वासुपूज्य शिव-रमणी, रमन मदन *दनु दारन हैं,
बाल काल संजम संभाल, रिपु मोह **न्यालबल मारन हैं. जय0

(* दनु – राक्षस; दान ** न्याल – सर्प.)

जाके पंचकल्यान भये, चंपापुरमें सुख कारन हैं;
इन्द्र वृन्द अमन्द मोदधर, किये भवोदधि तारन है. जय0

जाके बचनसुधा त्रिभूवन, जनको भ्रमरोग विदारन है;
जा गुन चिन्तन-अमल अनल मृत जन्म जरा वन जारन हैं. जय0

जाकी अरुन शान्ति छवि भा, दिवस प्रबोध प्रसारन है;
जाके चरन शरन सुरतरु वांछित, शिवफल विस्तारन हैं. जय0

जाको शासन सेवत मुनि जे, चार ज्ञान के धारन है;
इन्द्र फणींद्र मुकुट मनि द्युतिजल, जापर कीच पखारन हैं. जय0

जाकी सेव अछेव रमाकर चङ्गति विपत्ति उधारन है;
जा अनुभव घनसार सु आकुल ताप कलाप निवारन है. जय0

दादशमों जिनचंद्र जासवर जस उजासको पार न है;
भक्तिभार तैं नमें दौल को चिर विभाव दुखटारन हैं.

* * *

जिनेन्द्र स्तवन

निरखत जिनचंद्र वदन स्वपर सुरुचि आइ,
प्रगटी जिन आनकी, पिछान ज्ञानभानकी,
कला उद्योत होत, वासना निशा पलाइ नि0

शाश्वत आनंद स्वाद, पायो विनसो विसाद,
अन्य में अनिष्ट इष्ट, कल्पना नसाइ. नि0

साधी निज साधकी समाधि-मोहव्याधिकी,
उपाधि को विराधि के, आराधना सुहाइ नि0

धन दिन छिन आज सुगन, चिन्ते जिनराज अबै,
सुधरें सब काज दौल अचल रिद्धि पाइ. नि0

* * *

जिनेन्द्र स्तवन

प्रभु तो थारी; आज महिमा जानी,
अबलौं मोहमहामद पिय मैं, तुमरी सुधि बिसरानी,
भाग जगे तुम शान्ति छबी लखि, जडता नींद बिलानी. प्र0

जय विजयी दुखदाय रागरूष, तुम तिनकी थिति भानी,
शान्ति सुधासागर गुणआगर परम विराग विज्ञानी. प्र0

समवसरण अपार कमलाजुत, पै निर्ग्रंथ निदानी,
क्रोधविना दुठ मोह विदारक, त्रिभुवन पूज्य अमानी. प्र0

एक स्वरूप सकल ज्ञेयाकृत जग उदास जगज्ञानी
शत्रु मित्र सब में तुम सम हो, जो सुख दुख फलथानी. प्र0

परम ब्रह्मचारी ह्वे प्यारी, तुम हेरी शिवरानी
हो कृतकृत्य तदपि तुम शिव मग उपदेशक अगवानी. प्र0

भइ कृपा तुमरी तुमपे ते, भक्ति सु मुक्ति निशानी,
हो दयाल अब देहुं दौल को जो तुमने कृतठानी.
प्रभु तो थारी; आज महिमा जानी. प्र0

* * *

वीर जिनेन्द्र

वन्दो अद्भुत चंद्रवीर जिन भविचकोर चितहारी है;
परमानंद-जलधि विस्तारन, पाप ताप क्षयकारी हैं. वं0

उदित निरन्तर त्रिभूवन अन्तर, कीर्ति किरण पसारी है;
दोष मलंक कलंक अटंकित, मोह राहु निरवारी है. वं0

कर्मावरण *पयोद अरोधित, बोधित शिवमग चारी है;
गणधरादिमुनि **उडुगन सेवत, नित पूनमतिथि धारी है वं0

---

*पयोध = वादळ ** उडुगण = तारा

अखिल अलोकाकाश उलंघन, जासु ज्ञान उजियारी है;
दौलत तनसा कुमुदिन-कोदन, ज्यो चरम जगतारी है. वं0

* * *

वीर जिनेन्द्र

जय श्री वीर जिनेन्द्र चंद्र, शत इन्द्र वंद्य जगतार हैं. (टेक)

सिद्धारथ कुल कमल अमल रवि, भवि भूधर पवि-भार है;
गुनमणि कोष अदोष मोक्षपति, विपिनकषाय-तुषारं है. जय0

मदन कदन शिवसदन पद नमति, नित अनमित यतिसारं है;
रमा अनंत कन्त, अंतककृत अंत जंतु हितकारं है. जय0

फंद चंदना-कंदन दादुर, दुरित तुरत निर्वारं है;
रुद्रचरित अतिरुद्र उपद्रव, पवन अद्रिपति सारं है. जय0

अतातीत अचिंत्य सुगुन तुम, कहत लहतको पारं है;
हे ! जगमौल 'दौल' तेरे *क्रम, नमें शीश कर धारं है जय0

---

* क्रम = पग पैर

* * *

वीर जिनवर

जय शिव कामिनकन्त ! वीर भगवंत अनंत सुखाकर है;
विधिगिरीगंजन बुधमन रंजन, भ्रम तम भंजन **भाकर है.

** भाकर = भास्कर, सूर्य

जिन उपदेश्यो दुविध धर्म जो, सो सुररिद्ध रमाकर है;
भावि उर कुमुदिन-मोदन, भव-तम हरन अनूप निशाकर है.

परम विराग रहैं जगतैं पै, जगत-जीव रक्षाकर है;
इन्द्र फणीन्द्र खगेन्द्र चंद्र जग, ठाकर जाके चाकर है.

जासु अनंत सुगुणमणिगण, नित गणते मुनिजन थाक रहै;
जा प्रभु पद नव केवल लब्धि सु, कमलाको कमलाकर है.

जाके ध्यान-कृपाण रागरूष, पास-हरन समताकर है;
'दौल' नमें कर जोर हरन, भव-बाधा शिवराधाकर है.

* * *

श्री कुंथुनाथ जिन

कुंथन के प्रतिपाल कुंथुजग, तार सार गुण धार है;
वर्जित 1 ग्रंथ कुपंथ वितर्जित 2 अर्जितपंथ 3 अमारक है.

(1-ग्रंथ = परिग्रह. 2-पथप्रदर्शक. 3-अहिंसक. 4. भूति=वैभव, लक्ष्मी. 5-पार नहीं पाते. 6-अध्यात्मरूपी लक्ष्मी के भार को वहन करने वाले. 7-पोत=जहाज, वहाण.)

जाकी समवसरन बहिरंग 4 भूति गणधार 5 अपारक है;
सम्यग्दर्शन बोध चरण अध्यात्मरमा भर 6 भारक है.

दशधा धर्म 7 पोतकर भव्यों को भवसागर तारक है;
वर समाधिवन घन विभावरज पुंजनि कुंज निवारक है.

जासुज्ञान नभमें अलोकजुत, लोकयथा इक तारक है;
जासु ध्यान हस्तावलंब दुःख कूपविरुप उधारक है.

तज छखंड कमला प्रभु अमला, तपकमला आगारक है;
द्वादशसभा सरोज-सूर भ्रमतरु अंकूर उपारक है.

गुण अनंत कहि लहत अंतको ? सुरगुरुए बुध हारक है;
'दौल' नमें हे कृपाकंद ! भवद्वंद टार बहु वार कहैं.

* * *

चिन्मूरत दगधारी

चिन्मूरत दृगधारीकी मोहि, रीति लगति है अटापटी;

बाहिर नारकी-कृत दुख भोगे, अंतर सुखरस गटागटी.
रमति अनेक सुरनि संग पै तिस, परिणति तें नित हटाहटी.

ज्ञान विराग शक्ति तें विधिफळ भोगत पै विधि घटाघटी.
सदन निवासी तदपि उदासी, तातें आश्रव छटाछटी.

जे भव हेतु अबुधके ते तस, करत बंधकी झटाझटी
नारक पशु त्रिय षंड विकलत्रय, प्रकृतिनकी हूवे कटाकटी;

संयमधरि न सके पै संयम, धारनकी उर चटाचटी.
तास सुयश गुणकी 'दौलत' के लगी रहै नित रटारटी.

* * *

सम्मेदगिरी स्तवन

(राग-होरी)

आज गिरिराज निहारा, धन-भाग हमारा (टेक)

सिखिर सम्मेद नाम है जाको, भू पर तीरथ भारा,
तहाँ बीस जिन मुक्ति पधारे, और मुनिश अपारा
आर्यभूमि शिखामणि सोहै, सुरनर मुनि-मन प्यारा. आज0

तहँ थिर योग धार मुनिश्वर, निज-परंतत्त्व विचारा;
निजस्वभावमें लीन होयकर, सकल विभाव निवारा. आज0

जाहि जजत भवि भावनतें जब-भवभव पातक टारा;
जिनगुन धार धरम धन संचो, भव दारिक हरतारा. आज0

* * *

श्री नेमि जिनेश्वर (भूधरदासजी)

नेमिबिना न रहे मेरो जीयरा (टेक)
हाँ.....नेमि बिना न रहे मेरो जीयरा.

हेररि हेली.....तपत ऊर कैसो; लावत
क्यों निज हाथ न नियरा.....नेमि0 1

करि करि दूर.....कपूर.....कमल दल.....
लगत करुर कलाधर सीयरा नेमि0 2

काम विनाशक देवनिरंजन, रजमति के भवपीर विभंजन, 3

छेदी त्रिवेद अवेद करैया शर्म अनंतानंत लहैया. नेमि0 4

सादि अनंत सिद्धत्व सधैया, भविजनको भवपार करैया. नेमि0 5

भुधर के प्रभु नेमि पिया बिन.... (2)

शीतल होय न राजुल हियरा (2) नेमिबिना0 6

* * *

जिनेन्द्र प्रति विनती

चोपाई (16 मात्रा)

जै जगपूज परमगुरु नामी, पतित उधारन अंतरजामी,
दास दुःखी तुम अति उपकारी, सुनिये प्रभु ! अरदास हमारी.

यह भव घोर समुद्र महा है, भूधर भ्रम-जलपूर रहां है,
अंतर दुख दुःसह बहु तेरे, ते वडवानल साहिब मेरे.....

जनम जरागद मरन जहां है, देही प्रबल तरंग तहां है,
आवत विपति नदी गन जामैं, मोह महा मगर इक तामें.

तिस मुख जीव पर्यो दुख पावै, हे जिन ! तुम विन कौन छुडावै.
अशरनशरन अनुग्रह कीजै, यह दुख मेटि मुक्ति मुझ दीजै.

दीरधकाल गयो विललावैं, अब ये सूल सहे नहिं जावै,
सुनियत यौं जिन शासन मांही, पंचमकाल परमपद नांहीं.

कारण पांच मिलैं सब सारे, तब शिव सेवक जाहिं तुम्हारे,
तातै यह बिनती अब मेरी, स्वामी ! शरण लई हम तेरी.

प्रभु आगै चित साह प्रकासौं, भव भव श्रावक कुल अभिलासौं,
भव भव जिन आगम अवगाहौं, भव भव भक्ति शरणकी चाहौं.

भव भवमें संत संगति पाऊं, भव भव साधुनके गुन गाऊं,
परनिंदा मुख भूलि न भाखूं, मैत्री भाव सबनसों राखूं.

भव भव अनुभव आतम केरा, ताहु समाधि मरण नित मेरा,
जब लौं जनम जगतमें लाधौं काल लब्धि बल लहि शिव साधौं.

तब लौं ये प्रापति मुझ हूजो, भक्तिप्रताप मनोरथ पूजौ,
प्रभु सब समरथ हम यह लौरें, भूधर 'अरज' करत कर जोरे

* * *

गुरु विनती

बंदौ दिगंबर गुरु चरन, जग तरनतारन जान;
जे भरम भारी रोगकों, है राजवैद्य महान.

जिनके अनुग्रह विन कभी, नहीं कटे कर्म जंजीर;
ते साधु मेरे उर बसो, मम हरौ पातक पीर. 1

यह तन अपावन अथिर है, संसार सकल असार,
ये भोगविष-पकवान से, इस भांति सोच विचार;
तप विरचि श्री मुनि वन बसे, सब त्यागि परिग्रह भीर. ते साधु0 2

जे कांच कंचन सम गिनैं, अरि मित्र एक सरुप.
निंदा बढाई सारिखी, वनखंड शहर अनूप;
सुख दुःख जीवन मरण में, नहि खुशी नहिं दिलगीर. ते साधु0 3

जे बाह्य परवत वन बसें, गिरि गुहा महल मनोग,
सिल सेज समता सहचरी, शशि किरण दीपक जोग;
मृग मित्र भोजन तनमयी, विज्ञान निरमण निर. ते साधु0 4

सूखै सरवर जल भरे, सूखैं तरंगिनी-तोय,
बाटैं बरोही ना चलैं जहँ घाम गरमी होय;
तिस काल मुनिवर तप तपैं, गिरिशिखर ठाढे धीर. ते साधु0 5

घनघोर गरजैं घनघटा, जल परै पावस काल,
चहुं ओर चमकें बीजुरी, अति चलैं शीतल व्याल;
तरु हेट तिष्ठे जब जती, एकान्त अचल शरीर. ते साधु0 6

जब शीत मास तुषार सौ, दाहै सकल वनराय,
जह जमैं पानी पोखरां, थरहरै सबकी काय;
तब नगन निवसैं चौहटैं, अथवा नदी के तीर. ते साधु0 7

कर जोर 'भूधर' बीनवे, कब मिलैं वे मुनिराज
यह आस मनकी कब फलै, मेरे सरैं सगरे काज;
संसार विषम विदेशमें, जे विन कारण वीर,
ते साधु मरे मन वसौ, मम हरो पातक पीर. 8

* * *

समाधि मरणके अपूर्व अवसर पर सच्ची वीरता

(स्व. कविवर पं. बनारसीदासजी)

ज्ञान कुतक्का हाथ मारि अरि मोहना,
प्रगट्यो रुप अरुप अनंत सु सोहना;
जा पर्जयको अंक सत्यकर मानना,
चले बनारसीदास फेर नहीं आवना.

सुरति लगी शिवमांही हम बैठे अपने मौनसौं,
दिन दसके महिमान जगत जन बोलि बिगारे कौनसों;
गये विलास भरमके बादल, परमारथ पथ पौनसों,
अब अंतर गति भइ हमरी परचै राधा रौनसों.

प्रगटी सुधापानकी महिमा मन नहिं लाग वौनसो,
क्षण न सुहाय और रस फीके रुचि साहिब कै लोनसों;
रहो अपाय पाप सुध संपति, को निकसे निज भौनसों;
सहज सुभाव सद्गुरुकी संगति सुरजे आवा गौनसो.

* * *

सफल हो-भावना

सफलहो धन्य धन्य वा धरी जब ऐसी अति निर्मल होसी
परमदसा हमारी. . . . . (टेक)

धार दिगम्बर दिक्षा सुंदर, त्याग परिग्रह अरी;
वनवासी करपात्र परिसह, सही हो धीर धरी. सफल0

दुर्धर तप निर्भर नित तपि हो, मोह कुवृक्ष हरी;
पंचाचार क्रिया आचरि हो, सकल चार सुथरी. सफल0

पहाड पर्वत अरु गिरी गुफामें, उपसर्गो सहज सही;
ध्यान धाराकी दौर लगाके; परम समाधि धरि. सफल0

तेसठ प्रकृति भंग जब होसी, युतत्रिभंग सगरी;
जब सम्यग्दर्शन विबोध सुख, वीर्य कला प्रसरी. सफल0

लखि हो सकल द्रव्यगुण पर्जय, परिणति अति गहरी;
भागचंद जब सहज ही मिलिहो, अचल मुक्ति नगरी

सफल हो....धन्य धन्या वा धरी.....जब ऐसी अति निरमल होसी परम दशा हमरी.

* * *

समाधि भावना

(राग ः रखिया बंधावो भैया)

करले स्व घरकी.....सफाइ, सुमरन की घडी धन आइ,
अहो.....जीन शरणां हा-जिनजी तुम्हारा शरणा.
काल अनंत गुमायो यों ही,

निजरूप शुद्ध त्रिकालिक योंही, अब नहीं भूलेंगे हो
अब नहीं भुलें.....गे हो.....जिनजी0

श्री गुरु कुन्दकुन्द गुण गाठं, फिर भवकिचमें.....नहीं आवुं.
कृपाळु जिनजी, जीनजी तुमारा शरणां. हां....जिनजी0
होजा तैयार चतुर चेतनजी,

करले सिंगार चतुर चेतनजी. सिद्धों के घर जाना होगा.
निज सत्तामें समाहित होजा सिद्धों के घर जाना.....होगा.
जिन जिनजी0

जहां है सिद्धोंका मेला, काल अनंत रहेगा भेला
सादि अनंत रहेंगा....भेला, (2)

फिर वहांसे नहीं आना होगा फिर वहांसे नहीं
आना होगा....जीनजी तुमारा शरणां हां जिनजी0

* * *

नेमि जीनेश्वर

नेमि जिणेसर निज कारज कर्युं, छांड्यो सर्व विभावे जी;
आतमशक्ति सकल प्रगट करी, आस्वाद्यो निज भावोजी. ने0 1

राजुलनारीरे सारी मति धरी, अवलंब्या अरिहंतोजी;
उत्तम संगेरे उत्तमता वधे, सधे आनंद अनंतोजी. ने0 2

धर्म, अधर्म, आकाश अचेतना, ते विजाति अग्राह्योजी;
पुद्गल ग्रहवेरे कर्म कलंकता, वाधे बाधक बाह्योजी. ने0 3

रागी संगेरे राग दशावधे, थाये तिणे संसारोजी;
निरागीथी निजधर्मनुं जोडवुं लहीये भवनो पारोजी0 ने0 4

स्वाश्रयताथी टाळी पराश्रीतता ए रीत आश्रव नासेजी;
संवर वाधे रे साधि निर्जरा, आतमभाव प्रकाशेजी. ने0 5

नेमिप्रभु ध्याने एक्त्वता, निजतत्त्वे एक तानोजी,
शुक्ल ध्यान रे साधी सुसिद्धता, लहिये मुक्ति निदानो जी. ने0 6

जिन जिनवर जिनवृषभ जिनेश्वरा परमातम परमीशोजी,
दासो हं सोहं अहं मात्रमां सेवक पामे जगीशोजी. ने0 7

अंतःतत्त्व कारण परमातमा नेमि प्रभु हिय वसियो जी;
सेवकनी अविहड द्रढ सेवना करना पामे जगीशोजी. ने0 8

* * *

सिद्ध परमात्मानी स्तुति

अविनाशी अविकार परम रसधाम हो,
समाधान सर्वज्ञ सहज अभिराम हो;
शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध अनादि अनंत हो,
जगत शिरोमणि सिद्ध सदा दयवंत हो. 1

ध्यान अगनिकर कर्म कलंक सबै दहै,
नित्य निरंजनदेव सरूपी हो रहे,
ज्ञायकके आकार ममत्त्व निवारिकै,
सो परमातम सिद्ध नमूं शिर नायकै. 2

सवैया

ध्यान हुताशन में अरिइंधन झोंक दियो रिपु रोक निवारी,
शोक हर्यो भवि लोकनको वर केवळ ज्ञान मयुख उधारी;

लोक अलोक विलोक भये शिव जन्म जरा मृत पंक पखारी,
सिद्धन थोक बसै शिव लोक तिन्हें पग धोक त्रिकाल हमारी

तीरथनाथ प्रनाम कर तिनके गुण वर्णनमें बुधि हारी,
मोम गयो गलि मूस मझार रह्यो तहँ व्योम तदाकृति धारी;

लोक गहीर नदीपती नीर गये तरि तीर भये अविकारी,
सिद्धन थोक बसैं शिवलोक तिन्हें पग धोक त्रिकाळ हमारी.

(दोहा)

अविचल ज्ञान प्रकाशतैं, गुण अनंतकी खान,
ध्यान धरैं सो पाइए, परमसिद्ध भगवान;
अविनाशी आनंदमय, गुण पूरण भगवान,
शक्ति हिये परमातमा, सकल पदारथ ज्ञान.

* * *

वर्तमान विदेहक्षेत्रे विहरमान श्री स्वयंप्रभु जिनस्तुति

(छंद त्रोटक मात्रा 16)

जयदेव स्वयंप्रभु आप भये, भवि ध्याय स्वयं गुण शुद्ध लहे;
तुमरी महिमा हम कहि न सके, गुण गावत श्री गणधर भी थके. 1

भवि भाग्य उदय इह जन्म लिये, भव सागर तें भवि तार दिये;
जय धातुकी खंड जु पुर्व कही तहँ मेरु विजय शुभ राज रही. 2

विज्यानगरी तहाँ शोभित है, नृप मित्र भूत जन मोहत है.
जयमातु सुमंगल के उर में, जनमे सुआनंद भयो पुर मैं;
शशि लक्षण श्री जिन पाद लसे, सुर देखत ही हियमें विहसे. 3

तज राज विभव वन मांहि गये, धरि ध्यान शुद्धातम कर्म दहे;
लही केवळज्ञान प्रकाश कियो भवि जीवनको उपदेश दियो. 4

संसार महा दुख सागर में, जिन धर्म विना चिरलों जु भ्रमे;
गति चारन में दुख दर्द लहे, बहु जन्म जरा मृत रोग लहे. 5

शुभ जोग उदय नर जन्म लहा, जिन धर्म दया उर मांहि ग्रहा;
द्वय भांति परिग्रह त्याग करे, वन जाय शुद्धातम ध्यान धरे. 6

निजमें निजकी स्थिरता धरी के, सुखिया जब हूवे विधिकूं हरिके;
जब शुद्ध चिदानंद रूप गहे, अजरामर हूवे पद मोक्ष लहे. 7

यह दे उपदेश विहार कियो, भवि जीवनने उर धारी लियो;
धनि जन्म दिनं धनि आज धरी, तुम चर्ण नमें हम चित्त धरी. 8

अब लीजिये पास बुलाय सही, तुम दर्शन की मन लाग रही;
प्रभु पूरन आश करो हमरी, हमहुं पकरी शरना तुमरी. 9

तुमरे गुणमें मन लागत है, सब विघ्न समूह जु भागत हैं;
जिन आप तनें गुन देहुं हमें, धनि धन्य बन्यों यह आज समे. 10